पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियाँ

अध्याय 3

पौलुस और इफिसियों

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय...1
पृष्ठभूमि...1
लेखक...2
श्रोता...3
प्राथमिक श्रोता...3
द्वितीयक श्रोता..4
उद्देश्य...7
परमेश्वर का राज्य...7
चुनौतियां...9
संरचना और विषय-वस्तु..11
अभिवादन...11
प्रशंसा..11
प्रार्थना...12
मुख्य भाग..13
नागरिकता..13
प्रबंधन..15
जीवन की नियमसंहिता...17
अंतिम अभिनंदन..18
आधुनिक प्रयोग...19
राजा को सम्मान देना...19
स्तुति और आराधना...20
आज्ञाकारिता..21
राज्य का निर्माण..22
ब्राह्मांड पर विजय पाना..25
उपसंहार...27

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियाँ

अध्याय तीन

पौलुस और इफिसियों

परिचय

जो लोग अलग-अलग देशों में रहते हैं वे मुझे बताते हैं कि नई संस्कृतियों के साथ सामंजस्य बिठाना मुश्किल होता है। प्रत्येक देश के अपने अलग-अलग रिवाज, कानून और नीतिगत मूल्य होते हैं, और जो एक देश में उचित हो वह जरूरी नहीं कि दूसरे देश में भी उचित हो। व्यापरियों, पर्यटकों और मिशनरियों को नए देशों, जहां वे जाते हैं, की बातों को समझने में काफी समय व्यतीत करना पड़ता है।

कई रूपों में, मसीही जीवन में भी ऐसा ही पाया जाता है। हम सब का जन्म मसीह से दूर हुआ था और हम उसके राज्य से अलग थे। हम में से अधिकांश ने अंधकार के राज्य के मार्गों को सीखते और उनका अनुसरण करते हुए वर्षों बिताए थे। और अब जब हम हमारे नए देश, हमारे नए राज्य-मसीह में ज्योति के राज्य के मार्गों के अनुसार जीने का प्रयास करते हैं तो ये हमारे समक्ष चुनौतियां उत्पन्न करते हैं।

यह चुनौती कोई नई नहीं है। पहली सदी में भी मसीहियों को यह सिखाना पड़ा कि मसीह के राज्य से संबंधित मार्गों में किस प्रकार चलना है। अनेक लोग दूसरे धर्मों से मसीहियत में आए थे। मसीह में विश्वास करने से पूर्व उन्होंने शैतान का अनुसरण करने में काफी समय व्यतीत किया था। और उन्हें अपनी विचारधारा, भावनाओं, व्यवहार को बदलने में काफी कठिनाई हुई। अत: जब प्रेरित पौलुस ने इफिसियों को पत्री लिखी तो उसने मसीह में परमेश्वर के राज्य में जीवन के सार्वभौमिक चित्र को बनाकर इस चुनौती को प्रत्यक्ष रूप से संबोधित किया।

यह हमारी श्रृंखला "पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियां" का तीसरा अध्याय है। और हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है "पौलुस और इफिसियों"। इस अध्याय में हम पौलुस द्वारा इफिसुस की कलीसिया को लिखी पत्री की जांच करेंगे, और विशेषकर पत्री के उस प्रारूप पर ध्यान देंगे जिसकी रचना उसने मसीहियों को परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने, बनाए रखने और बढ़ाने की शिक्षा देने के लिए की।

इफिसियों को लिखी पौलुस की पत्री की हमारी जांच तीन भागों में बंटी होगी : पहला, हम पौलुस द्वारा इफिसियों को लिखी पत्री की पृष्ठभूमि की जांच करेंगे। दूसरा, हम इफिसियों की संरचना और विषय-वस्तु पर ध्यान देंगे। और तीसरा हम इस पत्री के आधुनिक प्रयोग पर चर्चा करेंगे। आइए, हम इफिसियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि के साथ आरंभ करें।

पृष्ठभूमि

एक प्रेरित के रूप में पौलुस का कार्य कलीसिया को आधिकारिक शिक्षा और अगुवाई प्रदान करना था, और आंशिक रूप से उसने यह कार्य पत्र लिखने के द्वारा किया। परन्तु पौलुस केवल ठोस धर्मशिक्षाएं ही फैलाना, या फिर भावी पीढ़ियों के लिए उन्हें लिखकर छोड़ना नहीं चाहता था। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण यह था कि ठोस धर्मशिक्षाओं को लागू करने के द्वारा वह अपने समय की कलीसिया की सेवा करना चाहता था। उसकी पत्रियां पासवानी और प्रेमपूर्ण देखभाल करने वाली थीं, और उन्होंने उन समस्याओं के बारे में सीधे बात की जिनका सामना कलीसिया ने पहली सदी में किया था।

इसका अर्थ है कि जैसे हम इफिसियों को लिखी पौलुस की पत्री का अध्ययन करते हैं, तो ऐसे प्रश्नों के साथ आरंभ करना सहायक होता है- यह पत्री किसे लिखी गई थी? और वे जीवन में किन महत्वपूर्ण विषयों का सामना कर रहे थे? इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर जानना हमें पौलुस की शिक्षाओं के बेहतर भाव को समझने में सहायता करेगा।

जब हम इफिसियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि की ओर देखते हैं तो हम तीन विषयों की ओर हमारा ध्यान केन्द्रित करेंगे। पहला, हम इस पत्री के पौलुस द्वारा लिखे जाने पर चर्चा करेंगे। दूसरा, हम मूल श्रोताओं की पहचान करेंगे। और तीसरा, हम यह पत्री लिखने के पीछे पौलुस के उद्देश्य पर ध्यान देंगे। आइए हम इफिसियों को लिखी पत्री के पौलुस द्वारा लिखे जाने पर ध्यान देते हुए आरंभ करें।

लेखक

कुछ आधुनिक विद्वानों ने सुझाव दिया है कि पौलुस ने वास्तव में इस पत्री को नहीं लिखा। इसकी अपेक्षा, उन्होंने तर्क दिया कि इफिसियों की पत्री की रचना पौलुस की परंपरा को आगे बढ़ाने और उसकी शिक्षा को नए रूपों में लागू करने के लिए पौलुस के विद्यार्थियों में से किसी ने की थी। परन्तु इस मत को ठुकराने का एक बड़ा कारण है। एक बात तो यह है कि यह पत्री कहती है कि यह पौलुस के द्वारा लिखी गई थी। इफिसियों 1:1 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

> पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, पवित्र और मसीह यीशु में विश्वासियों के नाम जो इफिसुस में हैं। (इफिसियों 1:1)

अब यह सही है कि आरंभिक कलीसिया में कुछ झूठे शिक्षक दूसरों के नाम से झूठे पत्र लिखते थे। परन्तु जब कभी कलीसिया को पता चलता था कि वह जालसाजीपूर्ण या झूठे नाम से आया है तो वे उसे ठुकरा देते थे। 2थिस्सलुनिकियों 2:1-3 में इस विषय पर पौलुस की शिक्षा को सुनें :

> हे भाइयो, किसी आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा जो कि मानो हमारी ओर से हो... किसी रीति से किसी के धोखे में न आना। (2थिस्सलुनिकियों 2:1-3)

यह मानना बहुत ही कठिन है कि पौलुस के एक प्रशंसक या विद्यार्थी ने इस प्रकार से उसके नाम का इस्तेमाल करके पौलुस की ही शिक्षाओं का खण्डन किया हो।

इससे बढ़कर, इफिसियों की पत्री धर्मशिक्षा और भाषाशैली में पौलुस की अन्य पत्रियों से बहुत मिलती है। इसके संबंध कुलुस्सियों की पत्री के साथ विशेषकर अधिक मजबूत हैं, इससे हमें अचभिंत नहीं होना चाहिए क्योंकि पौलुस ने शायद इन दोनों पत्रियों को एक ही समय में लिखा होगा। इनके बीच का संबंध इतने मजबूत और प्राकृतिक हैं कि यदि पौलुस ने अपना नाम भी इस पत्री में नहीं लिखा होता, तो भी इस बात की कल्पना करना कठिन है कि कलीसिया इस पत्री के लेखक होने का श्रेय किसी अन्य को देती।

अंत में, प्रेरितों के काम 19-21 के अनुसार पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया की स्थापना की थी और वह इफिसुस में दो वर्षों तक रहा था। उस समय के बाद भी उसने उस कलीसिया के प्राचीनों के साथ नजदीकी संबंध बनाए रखना जारी रखा था। यह पूरी तरह से अकल्पनीय है कि इफिसियों ने इस पत्री के झूठे नाम से लिखी होने को न पहचाना हो। और उसी तरह से यह विचार भी अकल्पनीय है कि आरंभिक कलीसिया ने इस जालसाजी को साफ न कर दिया हो जिसे ऐसी महत्वपूर्ण कलीसिया के प्रति ऐसे महत्वपूर्ण प्रेरित द्वारा की गई हो।

श्रोता

पौलुस के लेखक होने पर ध्यान देने के पश्चात हमें इफिसियों की पत्री के मूल श्रोताओं की ओर ध्यान लगाना चाहिए।

हम दो भागों में पौलुस के श्रोताओं की जांच करेंगे, पहले हम उसके प्राथमिक श्रोताओं, अर्थात् इफिसुस की कलीसिया की ओर, एवं फिर उसके द्वितीयक श्रोताओं, अर्थात् विशेषकर लिकुस घाटी की कलीसियाओं की ओर मुड़ेंगे। आइए हम पौलुस के प्राथमिक श्रोताओं के रूप में इफिसुस की कलीसिया की ओर देखते हुए आरंभ करें।

प्राथमिक श्रोता

आइए एक बार फिर इफिसियों 1:1 के शब्दों पर ध्यान दें :

> पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, पवित्र और मसीह यीशु में विश्वासियों के नाम जो इफिसुस में हैं। (इफिसियों 1:1)

इस पत्री के संबोधन में पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया को अपने श्रोता के रूप में प्रकट किया।

इफिसुस एशिया के रोमी प्रान्त की राजधानी था, जो संभवत: आधुनिक क्षेत्र एशिया माइनर को दर्शाता है। पहली सदी के दौरान यह रोमी साम्राज्य का सबसे घनी आबादी वाला और एक महत्वपूर्ण नगर था जो पूर्वी और पश्चिमी जगत के बीच फाटक का काम करता था। भौगोलिक रूप से, यह मींडेर नदी के उत्तर में एजियन समुद्र के किनारे पर स्थित था।

अब हमें उल्लेख करना चाहिए कि कुछ विद्वान मानते हैं कि इस पत्री को मूल रूप से इफिसियों को नहीं भेजा गया था। इस संदेह के अनेक प्रकार के कारण हैं, परन्तु उनका आधार मजबूत नहीं है। एक बात तो यह कि कुछ विद्वान यह दर्शाते हैं कि कुछ हस्तलिपियों में इफिसियों 1:1 में "इफिसुस में" शब्द नहीं पाए जाते हैं। जहां यह बात सही है, वहीं अधिकांश हस्तलिपियों में ये शब्द पाए जाते हैं, और किसी दूसरी हस्तलिपि में अलग श्रोता का नाम नहीं पाया जाता।

इससे बढ़कर, इस पत्री के अनेक विवरण खास तौर से इफिसुस से ही संबंधित थे। इन दो उदाहरणों पर ध्यान दें।

पहला, प्रेरितों के काम 19 से हम जानते हैं कि इफिसुस में उसके समय के दौरान पौलुस का सामना अरतिमिस देवी और अन्य धार्मिक क्रियाओं के आराधकों के साथ हुआ। इसके संबंध में, इफिसियों 5:11 में उसने "अंधकार के निष्फल कार्यों" के विरोध में शिक्षा दी, और इफिसियों 6:11-12 में उसने बल दिया कि मसीही झूठे देवताओं के विरुद्ध युद्ध करें।

दूसरा, पुरातत्वीय खोज से हम जानते हैं कि इफिसुस नगर को अरतिमिस के "पोषक" के रूप में जाना जाता था, और कहा जाता था कि अरतिमिस ने इफिसुस को एशिया के प्रान्त में "वैभवशाली" नगर बना दिया था। इस संबंध में, इफिसियों 5:27-29 में पौलुस ने मसीह का वर्णन कलीसिया का "पालन-पोषण करने वाले" के रूप में किया है, और यह भी कहा है कि किस प्रकार मसीह कलीसिया को "तेजस्वी" दुल्हन के रूप में बना रहा है।

इन और अन्य विवरणों की रचना विशेषकर इफिसियों की कलीसिया के साथ संबंध दर्शाने के लिए की गई प्रतीत होती है।

अंत में, आरंभिक कलीसिया के अनेक पूर्वजों ने इस बात की पुष्टि की थी कि पौलुस ने इफिसियों को यह पत्री भेजी थी। उदाहरण के तौर पर, लगभग दूसरी सदी के अंत में सिकन्दरिया के क्लेमेंट ने अपनी पुस्तक "दी इंस्ट्रक्टर" के अध्याय 5 में इन शब्दों को लिखा :

> और इफिसियों को लिखते हुए पौलुस ने निम्नलिखित रूप से इस उठाए गए बिंदू को बहुत ही स्पष्ट रूप से समझाया।

क्लेमेंट ने इस प्राक्कथन के बाद इफिसियों 4:13-15 का पूरा भाग लिखा।

इसी प्रकार, टरटूलियन, जिसने तीसरी सदी के आरंभ में लिखा था, ने अपनी कृति “अगेंस्ट मार्सियन” की पांचवीं पुस्तक के 17वें अध्याय में यह लिखा :

> कलीसिया की सत्य परंपरा यह दर्शाती है कि इस पत्री को लौदीकियों के पास नहीं परन्तु इफिसियों के पास भेजा गया था।

टरटूलियन के अनुसार उस समय से पूर्व की कलीसिया की संपूर्ण परंपरा ने पुष्टि की थी कि इस पत्री को इफिसुस भेजा गया था। और आरंभिक कलीसिया की कोई भी साक्षी इस विषय पर टरटूलियन के विरोध में नहीं है। सारांश में, इस बात को मानने के मजबूत प्रमाण हैं कि पौलुस का उद्देश्य था कि इस पत्री को इफिसुस की कलीसिया के द्वारा पढ़ा जाए।

अब जब हमने इस प्रमाण को देख लिया है कि इफिसुस की कलीसिया पौलुस की प्राथमिक श्रोता थी, तो हमें अपना ध्यान उसके द्वितीयक श्रोता, विशेषकर लिकुस घाटी की कलीसियाएं, की ओर लगाना चाहिए।

द्वितीयक श्रोता

पहली सदी में कुछ कलीसियाएं लिकुस घाटी में स्थापित हो गईं थीं। हम जानते हैं कि कुलुस्से और लौदीकिया शहरों में कलीसियाएं थीं, और हमारे पास इस बात का अनुमान लगाने का अच्छा कारण है कि हियरापुलिस में भी एक कलीसिया थी। यद्यपि इफिसियों को लिखी पौलुस की पत्री में इन कलीसियाओं का उल्लेख नहीं है, परन्तु यह सोचने का एक अच्छा कारण हमारे पास है कि जब पौलुस ने यह पत्री लिखी तो वे कलीसियाएं भी उसके मन में थीं।

लिकुस घाटी की कलीसियाओं के पौलुस के द्वितीयक श्रोता होने को दर्शाने के लिए हम दो प्रकार के प्रमाणों पर ध्यान देंगे : पहला, यह प्रमाण कि पौलुस ने अपरिचित श्रोताओं को पत्री लिखी, और दूसरा, लिकुस घाटी की कलीसियाओं से इस पत्री की प्रासांगिकता। आइए कुछ उन विवरणों पर ध्यान देने के साथ आरंभ करें जो दर्शाते हैं कि पौलुस के श्रोता उससे अपरिचित थे।

इफिसियों 1:15 में पहले पौलुस के शब्दों को सुनें :

> मैं भी प्रभु यीशु में तुम्हारे विश्वास और सब लोगों के प्रति तुम्हारे प्रेम को सुनकर, **(इफिसियों 1:15)**

स्पष्टत:, उसके बहुत सारे श्रोता ऐसे लोग थे जिनके विश्वास को उसने अपनी आंखों से नहीं देखा था। इफिसियों 3:2-3 में उसके शब्द इसी बात का सुझाव देते हैं :

> तुमने वास्तव में परमेश्वर के अनुग्रह की उस योजना के बारे में सुना है, जो तुम्हारे लिए मुझे सौंपी गई है, कि प्रकाशन के द्वारा रहस्य मुझ पर प्रकट किया गया, जैसे मैं संक्षेप में लिख चुका हूँ। **(इफिसियों 3:2-3)**

पौलुस ने कहा कि उसके श्रोता सुसमाचार के विषय में जानते थे, इसलिए नहीं कि उसने पहले उन्हें सिखाया था, परन्तु इसलिए कि उसने इसी पत्र के पिछले अध्यायों में इसके विषय में लिखा था। परन्तु निसंदेह पौलुस ने इफिसियों को व्यक्तिगत रूप से शिक्षा दी थी।

अन्य संकेत कि पौलुस ने अनेक अपरिचित लोगों को संबोधित किया था, यह है कि उसके पत्र में कोई व्यक्तिगत उल्लेख नहीं पाया जाता। पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाली उसकी अन्य सभी पत्रियों में पौलुस ने निम्नलिखित बातों को शामिल करके दर्शाया था कि वह अपने पाठकों को जानता है-

- • अपने श्रोताओं में से जिन लोगों के नाम वह जानता था;
- • विशेष लोगों को अभिनंदन;
- • समय का उल्लेख जो उसने अपने पाठकों के साथ बिताया था;
- • अपने पाठकों को निर्देशित संबोधन के परिचित शब्द, जैसे "भाई";
- • अपने पाठकों के प्रति अपने प्रेम की अभिव्यक्ति;
- • स्वयं को अपने पाठकों के "आत्मिक पिता" के रूप में दर्शाना;

वास्तव में, इफिसियों को लिखी पौलुस की पत्री पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली उसकी पत्रियों में से एकमात्र पत्री है जिसमें कोई व्यक्तिगत उल्लेख नहीं पाया जाता। और यह इस बात के बावजूद है कि इफिसुस की कलीसिया के साथ उसका बहुत ही घनिष्ठ सबंध था। यह दर्शाता है कि पौलुस चाहता था कि उसकी पत्री को इफिसुस की कलीसिया से लेकर उन अलग-अलग कलीसियाओं में भी पढ़ा जाए जिनसे पौलुस अपरिचित था।

यह देखने के पश्चात् कि पौलुस के श्रोताओं में अपरिचित कलीसियाएं भी शामिल थीं, अब हम उस प्रमाण की जांच करने के लिए तैयार हैं कि उसने लिकुस घाटी की कलीसियाओं, जिसमें कुलुस्से, लौदीकिया और हियरापुलिस की कलीसियाएं भी शामिल थीं।

लिकुस घाटी का एक संबंध पौलुस के मित्र तुखिकुस में पाया जा सकता है। इफिसियों 6:21-22 और कुलुस्सियों 4:7-8 के अनुसार तुखिकुस ने पौलुस के लिए कम से कम दो पत्र पहुंचाए थे- एक इफिसुस की कलीसिया को और दूसरा कुलुस्से की कलीसिया को। और ऐसा संभव है कि उसने एक ही यात्रा में उन पत्रों को पहुंचाया हो। और पौलुस ने इसके साथ-साथ लौदीकिया की कलीसिया को भी लिखा था, यद्यपि यह पत्र अब अस्तित्व में नहीं है।

पौलुस ने कुलुस्सियों 4:16 में इन शब्दों को लिखते हुए लौदीकियों की लिखी अपनी पत्री का उल्लेख किया :

> और जब यह पत्र तुम्हारे यहां पढ़ लिया जाए, तो ऐसा करना कि लौदीकिया की कलीसिया में भी पढ़ा जाए, और वह पत्र जो लौदीकिया से आए उसे तुम भी पढ़ना। **(कुलुस्सियों 4:16)**

यह अनुमान लगाना उचित है कि तुखिकुस ने ही वह पत्र पहुंचाया होगा जो पौलुस ने लौदीकिया की कलीसिया को लिखा था। यह इस बात को निश्चित करने की सर्वोत्तम विधि होगी कि दोनों कलीसियाओं ने दोनो पत्र पढ़े होंगे। और यह सोचना भी उचित होगा कि वह उन सबके पढ़ने के लिए इफिसियों की पत्री भी ले गया होगा।

यह मानने का अन्य कारण कि पौलुस चाहता था कि लिकुस घाटी की कलीसियाएं इफिसियों की पत्री भी पढें, यह है कि उसके कारावास के दौरान ये कलीसियाएं पौलुस के मन में महत्वपूर्ण स्थान रखती थीं। कुलुस्सियों 2:1 में उसके शब्दों को सुनें :

> मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो, कि तुम्हारे और उन के जो लौदीकिया में हैं, और उन सब के लिये जिन्होंने मेरा शारीरिक मुंह नहीं देखा मैं कैसा परिश्रम करता हूँ। **(कुलुस्सियों 2:1)**

पौलुस कुलुस्से में फैल रही झूठी शिक्षाओं से चिंतित था, और उसने निश्चिततः यह मान लिया था कि ऐसी ही शिक्षाएं लौदीकिया और उस क्षेत्र की अन्य कलीसियाओं में भी फैली हुई थीं।

उदाहरण के तौर पर, उसने यह लिखते हुए कुलुस्सियों 4:12-13 में हियरापुलिस की कलीसिया का उल्लेख किया :

> इपफ्रास... तुम्हारे लिये और लौदीकिया और हियरापुलिसवालों के लिये बड़ा यत्न करता रहता है। (कुलुस्सियों 4:12-13)

पौलुस द्वारा हियरापुलिस का उल्लेख शायद वहां एक संगठित कलीसिया की ओर संकेत करता है। इसका अर्थ यह प्रतीत होता है कि लिकुस घाटी की कलीसियाएं साथ मिलकर इपफ्रास के लिए प्रार्थना कर रही थीं कि वह पौलुस के साथ रहे, जिसके द्वारा उन्होंने इपफ्रास को उन कलीसियाओं का स्मरण दिलाने वाला बना दिया जिनका प्रतिनिधित्व वह करता था।

लिकुस घाटी की कलीसियाओं के लिए पौलुस की चिंता सुझाव देती है कि उसने उनके बीच सेवा करने के अवसर को नजरअंदाज नहीं किया होगा, विशेषकर यदि बात केवल तुखिकुस द्वारा लेकर जाए जाने वाले पत्र की एक अतिरिक्त प्रति बनाने की ही होती।

एक तीसरा कारण जो हमें यह सोचने पर मजबूर करे कि इफिसियों की पत्री लिकुस घाटी की कलीसियाओं के लिए भी थी, यह है कि पौलुस द्वारा इफिसियों और कुलुस्सियों को लिखी पत्रियां एकसमान समस्याओं को संबोधित करती हैं। अतः यह कहना सही होगा कि इफिसियों को लिखी पत्री लिकुस घाटी की कलीसियाओं के लिए भी प्रासंगिक और उचित रही होगी। इसे स्पष्ट करने के लिए हम केवल एक उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।

जिस प्रकार हमने पिछले अध्याय में देखा था कि कुलुस्सियों के विश्वासियों ने उन झूठे शिक्षकों के विरुद्ध संघर्ष किया जो दुष्टात्माओं की आराधना करते थे। पौलुस ने पूरे ब्राह्मांड और विशेषकर दुष्टात्माओं पर मसीह की सर्वोच्चता पर बल देने के द्वारा इन झूठी शिक्षाओं का सामना किया।

उदाहरण के तौर पर, कुलुस्सियों 1:16 में पौलुस ने इन शब्दों में यीशु का वर्णन किया :

> क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुतांए, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। (कुलुस्सियों 1:16)

इसकी तुलना इफिसियों 1:20-22 से करें जहां पौलुस ने मसीह का वर्णन इस प्रकार किया :

> मसीह... (को)... सब प्रधानता और अधिकार और शक्ति और प्रभुता और न केवल इस युग बल्कि आने वाले युगों में लिए जाने वाले नाम से ऊपर किया... और उसे सब वस्तुओं पर प्रधान नियुक्त किया। (इफिसियों 1:20-22)

इस अनुच्छेद में, जिस प्रकार हमने अभी कुलुस्सियों में पढ़ा है, पौलुस ने यूनानी शब्द आरखे, और एग्ज़ूसिया, का प्रयोग किया, जिसका अनुवाद यहां पर शासन और अधिकार किया गया है। परन्तु इन शब्दों का उल्लेख प्रमुखतः आकाशीय आत्मिक प्राणियों के लिए किया गया है। उसने यूनानी शब्द क्यूरियोटेस के प्रयोग को भी दोहराया है, जो या तो मानवीय अगुवों या स्वर्गदूतों अथवा दुष्टात्माओं जैसी आत्मिक शक्तियों को दर्शाते हैं। अंत में, पौलुस ने यूनानी शब्द डूनामिस का प्रयोग किया जिसका अनुवाद यहां पर प्रभुता किया गया है। यद्यपि डूनामिस का प्रयोग प्रायः केवल "सामर्थ" या "योग्यता" को दर्शाने के लिए ही किया जाता है, परन्तु पहली सदी के यहूदी धर्म ने इसका प्रयोग उन दुष्टात्माओं के लिए किया जो शैतान का साथ देकर परमेश्वर के विरुद्ध लड़ाई करती हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पौलुस के संदेशवाहक के रूप में तुखिकुस की भूमिका, लिकुस घाटी की कलीसियाओं के प्रति पौलुस की विशेष चिंता, और कुलुस्सियों और इफिसियों में पाए जाने वाले एकसमान विषय इस बात पर बल देते हैं कि जब पौलुस ने इफिसियों को अपनी पत्री लिखी थी तो उसके मन में लिकुस घाटी की कलीसियाएं भी थीं।

अब जब हमने देख लिया है कि पौलुस के मूल श्रोताओं में इफिसुस की कलीसिया और लिकुस घाटी की कलीसियाएं भी शामिल थीं, तो हम उसके लेखन में उसके उद्देश्य को और भी ध्यान से देखने की स्थिति में हैं। पौलुस ने इस पत्री को भेजने की आवश्यकता क्यों महसूस की?

उद्देश्य

सामान्यत:, पौलुस ने अपनी पत्रियों की रचना लोगों के उस स्थानीय समूह के लोगों की विशेष समस्याओं को संबोधित करने के लिए की थी जिसे वह प्रत्यक्ष या व्यक्तिगत रूप से जानता था। परन्तु इफिसियों में उसने कुछ अलग किया, उसने भिन्न-भिन्न स्थानों की अनेक कलीसियाओं की समस्याओं का प्रत्युत्तर दिया, जिनमें से अधिकांश से वह मिला भी नहीं था।

अब इस पत्री को लिखने में पौलुस का उद्देश्य इन सभी कलीसियाओं की समस्याओं को सुलझाना था। परन्तु उसकी विधि प्रत्येक विषय को अलग-अलग संबोधित करना नहीं थी।

पौलुस के उद्देश्य पर हमारी चर्चा दो भागों में विभाजित होगी। पहले हम इफिसियों को लिखी पौलुस की पत्री में परमेश्वर के राज्य के विषय पर ध्यान देंगे। दूसरा हम देखेंगे कि किस प्रकार पौलुस ने परमेश्वर के राज्य के विषय में कलीसिया के समक्ष आई चुनौतियों को संबोधित किया। आइए पहले हम परमेश्वर के राज्य के विषय पर ध्यान दें।

परमेश्वर का राज्य

अधिकांश मसीही परमेश्वर के राज्य की अभिव्यक्ति को समदर्शी सुसमाचार-मत्ती, मरकुस, और लूका- के साथ जोड़ते हैं। परन्तु परमेश्वर का राज्य पौलुस के लिए भी एक महत्वपूर्ण लक्ष्य था। उसने अपनी पत्रियों में 16 बार परमेश्वर के राज्य का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया, और उसने प्राय: दूसरे राजकीय शब्दों का भी इस्तेमाल किया।

पिछले अध्यायों में हमने बल दिया था कि पौलुस की युगांतविद्या -अंत के दिनों की उसकी धर्मशिक्षा- उसकी विचारधारा की केन्द्र थी। पौलुस समझ गया था कि मसीह इतिहास को उसकी संपूर्णता में पहुंचा रहा था, जिसकी शुरुआत पृथ्वी पर की अपनी सेवकाई के आरंभ के साथ होती है और कलीसिया के युग के साथ आगे बढ़ती है और मसीह के विजयी पुनरागमन के साथ जिसकी अंत में पूर्णता होगी। पौलुस ने मसीह के कार्य को सामान्यत: पाप और मृत्यु के वर्तमान युग और आने वाले उस युग जिसमें परमेश्वर अपनी अंतिम आशीषें और दण्ड उंडेलेगा के बीच एक साझे समय के रूप में बताया।

परन्तु जब यीशु और सुसमाचार लेखकों ने आने वाले युग के बारे में बात की, तो उन्होंने इसका विवरण परमेश्वर के राज्य के शब्दों में किया। उन्होंने इसे उस समय के रूप में देखा जब परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर उस प्रकार से प्रकट होगा जिस प्रकार स्वर्ग में है। और निसंदेह, पौलुस ने भी इस पर विश्वास किया।

इस दृष्टिकोण से, पौलुस की विचारधारा में परमेश्वर के राज्य के महत्व को बढ़ा-चढ़ा कर नहीं बताया जा सकता। वास्तव में, पौलुस के मित्र और सहयात्री लूका के अनुसार परमेश्वर के राज्य के विषय में पौलुस के प्रचार ने पौलुस की प्रैरितिक सेवकाई के मुख्य भाग की रचना की। प्रेरितों के काम 28:30-31 में लूका के शब्दों को सुनें :

> **और वह पूरे दो वर्ष... परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा। (प्रेरितों के काम 28:30-31)**

इस समय के दौरान पौलुस रोम के कारागृह में था- शायद यह वही जगह और समय था जब उसने इफिसियों की पत्री लिखी थी। और ध्यान दें किस प्रकार उसने वहां पौलुस की सेवकाई का वर्णन किया। यह कहने की अपेक्षा कि पौलुस ने "सुसमाचार" का प्रचार किया, लूका ने कहा कि पौलुस ने "परमेश्वर के राज्य" का प्रचार किया।

आधुनिक कलीसिया में लोग प्राय: सुसमाचार या शुभ-संदेश को व्यक्ति के पापों की क्षमा और अनन्त जीवन पाने की प्रतिज्ञा के साथ जोड़ते हैं। और ये हमारी आशा के अद्‌भुत पहलू हैं।

परन्तु बाइबल में, सुसमाचार का क्षेत्र सार्वभौमिक है। यह वह संदेश है कि हमारा स्वर्गीय राजा अपनी शक्ति और अधिकार का प्रयोग अपने शत्रुओं को अधीन करने और पाप पर विजय पाने, अपने लोगों को उनके दासत्व से छुड़ाने और नई पृथ्वी पर शासकों के रूप में उन्हें नियुक्त करने में कर रहा है। इसीलिए यीशु और सुसमाचार लेखकों ने प्राय: "राज्य के सुसमाचार" के बारे में बात की। और इसलिए यह कहना उचित है कि जब पौलुस ने इफिसियों को परमेश्वर के राज्य की प्रकृति के बारे में निर्देश दिए तो वह उन्हें सुसमाचार का विशाल चित्र प्रदान कर रहा था।

यद्यपि पौलुस ने इफिसियों में परमेश्वर के राज्य का उल्लेख स्पष्ट रूप से कुछ ही बार किया, परन्तु उसने इसके विषय में प्राय: बात की। प्राय: उसके शब्दों में हम पुराने नियम के इस्राएल के राज्य और रोमी साम्राज्य के बारे में उल्लेख पाते हैं। इन दोनों उल्लेखों ने पौलुस के पाठकों को स्मरण दिलाया कि उसका सुसमाचार एक राज्य, विशेषकर परमेश्वर के राज्य के बारे में था।

आइए उन छ: तरीकों पर ध्यन दें जिनके द्वारा पौलुस ने इफिसियों में परमेश्वर के राज्य की ओर ध्यान आकर्षित किया। पहला है नागरिकता का पहलू जिसका उल्लेख पौलुस ने इफिसियों 2:12,19 में किया। पुराने नियम में परमेश्वर के लोग राज्य या इस्राएल के राज्य के रूप में संगठित होते थे। परमेश्वर उनका राजा था और वे उसके राज्य के नागरिक थे। इसी प्रकार, पौलुस के दिनों में सबसे कीमती और प्रसिद्ध नागरिकता रोमी साम्राज्य की थी। इन्हीं कारणों से जब पौलुस ने मसीहियों को "नागरिकों" के रूप में दर्शाया तो उसके श्रोता समझ गए होंगे कि वे एक राज्य के नागरिक हैं।

यही बात उत्तराधिकार के पहलू के विषय में भी है, जिसका उल्लेख पौलुस ने इफिसियों 1:14,18 में, और 5:5 में किया था। पुराने नियम में केवल इस्राएल के राज्य के नागरिकों को ही वाचा की भूमि में उत्तराधिकार दिया गया था। और रोमी साम्राज्य में केवल नागरिकों को ही उत्तराधिकार के अधिकार दिए गए थे। दूसरे शब्दों में, उत्तराधिकार के अधिकार केवल उन्हीं नागरिकों के लिए उपलब्ध थे जो राज्य के नागरिक थे। और वास्तव में पौलुस ने मसीह के राज्य के साथ स्पष्ट रूप से हमारा संबंध जोड़ा।

और सैन्य सेवा पर ध्यान दीजिए जिसका उल्लेख पौलुस ने इफिसियों 6:10-18 में किया। युद्ध का सीधा संबंध राज्यों के पहलू से होता है। पुराने नियम में राज्य के सभी हृष्ट-पुष्ट नागरिकों को इस्राएल की सेना में सेवा करना आवश्यक था। और रोमी साम्राज्य में केवल नागरिकों को सैन्य सेवाएं प्रदान करना आवश्यक था। अत:, पौलुस का यह बल देना कि मसीही आत्मिक युद्ध में लगें, इसमें परमेश्वर के राज्य की नागरिकता का अर्थ भी निहित है।

इससे आगे, सृष्टि पर अधिकार का उल्लेख इफिसियों 1:20-2:6 में किया गया है और यह परमेश्वर के राज्य से संबंधित है। पुराने नियम में इस्राएल का एक मुख्य लक्ष्य पृथ्वी पर अपने अधिकार का विस्तार करना था। यही बात रोमी साम्राज्य पर भी लागू होती है। अत: जब पौलुस ने सिखाया कि विश्वासी मसीह के साथ संपूर्ण सृष्टि पर अधिकार के स्तर पर विराजमान हैं, तो उसने दर्शाया कि मसीह राजा है, और कि विश्वासी उसके राज्य में नागरिक और अधिकारी दोनों हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इफिसियों 3:15 में हमारे नामों के स्रोत के उल्लेख में भी राजकीय संबंध पाए जाते हैं। पुराने नियम में, परमेश्वर के लोगों को उसके नाम से बुलाया जाता था क्योंकि वे उसके राज्य का हिस्सा थे।

उदाहरण के तौर पर आमोस 9:11-12 के शब्दों को सुनें :

> उस समय मैं दाऊद की गिरी हुई झोपड़ी को खड़ा करूंगा, जिस से वे बचे हुए एदोमियों को वरन सब अन्यजातियों को जो मेरी कहलाती है, अपने अधिकार में लें, यहोवा... की यही वाणी है। (आमोस 9:11-12)

जब यहोवा ने दाऊद के झोपड़ी की पुन: स्थापना के विषय में बात की तो उसका अर्थ था कि वह मानवीय इतिहास की पूर्णता के भाग के रूप में दाऊद के वंश के राजत्व के अधीन इस्राएल के राज्य की पुन: स्थापना करेगा। और जो इस पुन: स्थापित राज्य में जोड़े जाएंगे वे परमेश्वर के नाम से बुलाए जाएंगे।

रोमी साम्राज्य में भी नाम का राज्य से संबंध था। विशेष रूप से यह उनके लिए सामान्य था जिन्हें साम्राज्य में नागरिकता प्रदान की गई है कि वे उनका नाम लें जिन्होंने उन्हें नागरिकता के लिए प्रायोजित किया है, या उस सम्राट का नाम जिन्होंने उसे नागरिकता प्रदान की है। कोई भी विषय हो दूसरे का नाम लेना साम्राज्य में शामिल होने का पहलू था।

अंत में, इफिसियों 6:20 में पौलुस ने स्वयं को परमेश्वर के दूत के रूप में प्रकट किया। पुराने नियम और रोमी परिपेक्ष्य में दूत राजा या सम्राट का आधिकारिक प्रतिनिधि होता था।

इन और दूसरे अनेक रूपों में पौलुस ने प्रकट किया कि इस पत्री में उसका विशाल केन्द्र परमेश्वर के राज्य के विषय में उसके पहलू से संबंधित था।

अब जब हमने इफिसियों को लिखी पौलुस की पत्री में परमेश्वर के राज्य के विषय को देख लिया है, तो हम पौलुस द्वारा संबोधित परमेश्वर के राज्य के समक्ष चुनौतियों की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं।

चुनौतियां

पौलुस ने उन अनेक चुनौतियों का उल्लेख किया जिनका समाना इफिसुस और लिकुस घाटी की कलीसियाओं ने किया था, परन्तु समय की सीमितता को देखते हुए हम केवल तीन का उल्लेख करेंगे- "पुराना मुनष्यत्व" या पापमय स्वभाव जो हमें पाप के लिए उत्साहित करता हुआ प्रत्येक विश्वासी में "नए मनुष्यत्व" के विरुद्ध लड़ाई करता है; यहूदी और गैरयहूदी मसीहियों के बीच जातिगत विवाद; और दुष्टात्मा की शक्तियां।

पहला, जब पौलुस ने पापमय स्वभाव या पापमय आदतों के विषय में लिखा तो उसने राज्य की भाषा का उपयोग किया और सिखाया कि परमेश्वर के राज्य के नागरिकों के चरित्र में पाप नहीं पाया जाना चाहिए।

उदाहरण के तौर पर इफिसियों 5:5 में पौलुस ने ये शब्द लिखे :

> किसी व्यभिचारी या अशुद्ध व्यक्ति या लोभी... का मसीह और परमेश्वर के राज्य में कोई उत्तराधिकार नहीं है (इफिसियों 5:5)

परमेश्वर के राज्य के नागरिक मसीह की आज्ञा मान सकते हैं या उसकी अवज्ञा कर सकते हैं। यदि वे अपने राजा के प्रति विश्वासयोग्य रहते हुए आज्ञा मानते हैं तो वे वाचा की आशीषों को प्राप्त करेंगे, जिनमें पापों की क्षमा, और अनन्त जीवन भी शामिल होते हैं। परन्तु यदि एक नागरिक राजा और उसके द्वारा दिए गए उद्धार के प्रस्ताव को ठुकरा कर मसीह का तिरस्कार कर देता है तो उस व्यक्ति का मसीह के राज्य में कोई उत्तराधिकार नहीं होता।

दूसरा, पौलुस ने कलीसिया में यहूदियों और गैरयहूदियों के बीच जातिगत विवादों के विषय को संबोधित करने के लिए परमेश्वर के राज्य के रूपक का प्रयोग किया। इफिसियों 2:11-13 में उसके शब्दों को सुनें :

> एक समय में तुम जो शारीरिक रूप से अन्यजाति हो और शारीरिक रूप से हाथ से "खतनाप्राप्त" कहलाने वाले लोगों द्वारा "खतनारहित" कहलाते हो, उस समय मसीह के बिना, इस्राएल की नागरिकता से दूर और प्रतिज्ञा की वाचाओं से अनजान थे... परन्तु अब तुम जो पूर्व में दूर थे मसीह यीशु में उसके लहू द्वारा निकट लाए गए हो। **(इफिसियों 2:11-13)**

यहां, पौलुस ने खतना न पाए हुए अपने गैरयहूदी पाठकों की मसीह में आने से पूर्व की स्थिति और विश्वास में आने के बाद की उनकी स्थिति के बीच अन्तर स्पष्ट किया। विश्वास में आने से पूर्व वे इस्राएल, अर्थात् पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य, के नागरिक नहीं परन्तु विदेशी थे। परन्तु जब गैरयहूदी विश्वास में आए तो वे राज्य के पूर्ण नागरिक बन गए।

पौलुस ने यह भी कहा कि गैरयूदियों को प्रतिज्ञा की वाचा में भी शामिल नहीं किया जाता था। पुराने नियम की वाचाएं राष्ट्रीय एवं परमेश्वर और इस्राएल के बीच परमेश्वर की ओर से किए गए समझौते होते थे। वे ऐसे कानूनी प्रबन्ध होते थे जिनके द्वारा परमेश्वर पृथ्वी पर अपने राज्य का संचालन करता था। एक बार जब गैरयहूदियों को मसीह के राज्य में रोपित कर दिया गया तो वे इन राष्ट्रीय वाचाओं के अधिकार तले आ गए। और फलस्वरूप, उन्हें वाचा की आशीषें प्राप्त हुईं।

नागरिकता और वाचाओं के रूप में कलीसिया के विषय में पौलुस की चर्चा ने दर्शाया कि पौलुस कलीसिया को परमेश्वर के राज्य के रूप में दर्शा रहा है। सारांश में, पौलुस ने सिखाया कि यहूदियों और गैरयहूदियों का आंशिक रूप से परस्पर मेलमिलाप हो गया है क्योंकि वे अब एक ही राज्य के नागरिक हैं।

अंत में, पौलुस ने दुष्टात्माओं की उन शक्तियों के विषय को संबोधित करने के लिए राज्य की भाषा का वर्णन किया जो कलीसिया को चुनौती प्रदान कर रहीं थीं।

जैसा हमने पिछले अध्याय में देखा कि लिकुस घाटी की कलीसियाओं को झूठे शिक्षकों के कारण मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था। इन झूठे शिक्षकों ने यूनानी धर्म और यहूदी व्यवस्था के गलत रूप से समझे गए ज्ञान को आपस में मिला दिया ताकि मसीहियों को इस बात से भ्रमित करके उनसे आत्मिक शक्तियों, जिनमें दुष्टात्माएं और पृथ्वी, हवा, पानी और अग्नि जैसे ब्राह्मांड के मूल तत्व भी शामिल हैं, की आराधना करवाएं। पौलुस ने इन दुष्टात्माओं और मूल तत्वों का वर्णन उन कई रूपों में किया जो उसके परमेश्वर के राज्य के धर्मविज्ञान से संबंधित थे। परन्तु इस विषय पर उसका सबसे स्पष्ट कथन इफिसियों 2:1-2 में पाया जाता है :

> तुम जो अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे, जिसमें तुम पूर्व में इस संसार के मार्गों के अनुसार, आकाश के अधिकार के शासक के अनुसार जिसकी आत्मा अनाज्ञाकारिता के पुत्रों में कार्य करती है, चलते थे। **(इफिसियों 2:1-2)**

पौलुस ने कहा कि दुष्टात्माओं का अपना राज्य है जिसे उसने आकाश का राज्य कहा। इस राज्य का शासक या राजा है, जो उसको संचालित करता है। जैसा कि हम पवित्रशास्त्र के शेष भाग से जानते हैं, दुष्ट आत्मा शैतान है। यह कोई चकित कर देने वाली बात नहीं कि बाद में पौलुस ने कलीसिया और शैतान के बीच के विरोध को दो राज्यों के बीच युद्ध के रूप में कहा। इफिसियों 6:12 में उसके शब्दों को सुनें :

> **क्योंकि हमारा युद्ध लहू और मांस के विरुद्ध नहीं अपितु शासकों, अधिकारियों, अंधकार की सांसारिक शक्तियों एवं दुष्ट की उन आत्मिक शक्तियों के विरुद्ध है, जो आकाश में हैं। (इफिसियों 6:12)**

परमेश्वर के राज्य के रूप में कलीसिया अंधकार के राज्य, जिसमें शैतान और उसकी दुष्टात्माएं शासन करती हैं, आकाशीय युद्ध में लगी हुई है।

पौलुस के मूल श्रोताओं के समक्ष व्यक्तिगत पाप से जातिगत विवाद, गैरमसीही शिक्षाएं एवं दुष्टात्माएं जैसी विभिन्न प्रकार की समस्याएं थी। और पौलुस आश्वस्त था कि इन विभिन्न समस्याओं को सर्वोत्तम रूप से संबोधित करने का तरीका उन्हें एक विषय के साथ जोड़ना था। अत: उसने उन्हें मसीह में परमेश्वर के राज्य को सार्वभौमिक प्रकाश में रखा, और अपने पाठकों को वह विशाल चित्र प्रदान किया कि परमेश्वर किस बात को पूरा कर रहा है।

प्रभु ने अपने राज्य में नागरिकता प्रदान करते हुए नए रूप में अपने लोगों की रचना की, जिससे वे अब अपने पाप के स्वभावों और शैतान के राज्य के गुलाम न रहें। उसने उन्हें बुलाया और राज्य की आशीषों में भागी बनाते हुए परस्पर सद्भाव के साथ रहने के योग्य बनाया। और उसने उन्हें उनके दुष्ट शत्रुओं के विरुद्ध हथियारों से सुसज्जित भी किया।

इस प्रकार से परमेश्वर के राज्य के विषय पर बात करने के द्वारा पौलुस ने प्रारंभिक कलीसिया को मसीही जीवन को एक संगठित रूप में समझने का तरीका प्रदान किया और उन्हें प्रेम एवं समर्पण के साथ जीने के लिए उत्साहित किया।

संरचना और विषय-वस्तु

अब जब हमने इफिसियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि की जांच कर ली है, तो हम इफिसुस की कलीसिया को लिखी पौलुस की पत्री की संरचना और विषय-वस्तु का सर्वेक्षण करने की स्थिति में हैं।

इफिसियों को लिखी पौलुस की पत्री को पांच मुख्य भागों में बांटा जा सकता है- 1:1-2 में अभिवादन; 1:3-14 में परमेश्वर की प्रशंसा; 1:15-23 में इफिसियों के लिए पौलुस की निरंन्तर प्रार्थना का स्पष्टीकरण; 2:1-6:20 में प्रकाश और अंधकार के राज्यों के बीच अंतर दर्शाता हुआ मुख्य भाग; और 6:21-24 में अंतिम अभिनंदन।

अभिवादन

अभिवादन 1:1-2 में पाया जाता है। यह कहता है कि पत्री प्रेरित पौलुस की ओर से है, और यह भी दर्शाता है कि उसकी प्रेरिताई परमेश्वर की इच्छा से है। परमेश्वर की इच्छा का यह उल्लेख पौलुस को परमेश्वर के आधिकारिक प्रतिनिधि के रूप में दर्शाता है जिससे पौलुस के शब्द दैवीय अधिकार को रखते हैं। अभिवादन संक्षिप्त आशीष के रूप में स्तरीय अभिनंदन के साथ समाप्त होता है।

प्रशंसा

अब 1:3-14 में परमेश्वर की प्रशंसा का भाग प्रकट होता है। यह पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली पौलुस की पत्रियों में से एकमात्र पत्री है जिसमें अभिवादन के बाद परमेश्वर की प्रशंसा का भाग आता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सामान्यत: पौलुस अभिवादन के बाद व्यक्तिगत उल्लेख या अभिनंदन देता था। परन्तु जैसा हम देख चुके हैं, इफिसियों की पत्री में किसी प्रकार के कोई व्यक्तिगत उल्लेख नहीं पाए जाते।

हमें निश्चित तौर पर पता नहीं है कि क्यों पौलुस ने व्यक्तिगत अभिनंदन नहीं लिखे। शायद उसने सोचा होगा कि अनेक लोगों को लिखे इस पत्र में प्रशंसा का एक खण्ड ज्यादा अच्छा रहेगा। या फिर वह शायद आगे आने वाले धर्मशिक्षा-संबंधी खण्डों का आधार तैयार करना चाहता था। कुछ लोग इसे प्रार्थना के खण्ड के रूप में देखते हैं जो पहले तीन अध्यायों तक चलता है। अन्य लोगों ने दर्शाया है कि प्राचीन जगत के आधिकारिक लेखनों में राजा का स्तुतिगान सामान्य बात थी। कैसे भी अनुमान हम लगाएं पौलुस द्वारा अपनी पत्री को इस प्रकार की संरचना देना काफी जटिल था। शायद, उसने विभिन्न कारणों से ऐसा किया होगा जिसमें कुछ वे कारण भी शामिल होंगे जिनका उल्लेख हमने किया है।

इस प्रशंसा को पत्री में शामिल करने के पीछे पौलुस के उद्देश्यों का पता लगाना शायद कठिन है परन्तु उसकी विषय-वस्तु को पहचानना आसान है। हम कुछ ऐसी बातों पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं- इन पदों में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के कार्यों को स्पष्ट रूप से सम्मान देते हुए उसका मजबूत त्रित्ववादी धर्मविज्ञान; पद 7 में यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा उद्धार पर बल; पद 9 में सुसमाचार के रहस्य का प्रकाशन; एवं पद 11 से 14 में पवित्र आत्मा के वरदान से हमारी भावी महिमा की प्रतिज्ञा। ये सब विचार ध्यान देने योग्य हैं।

परन्तु एक विशाल विचार है जिसमें न केवल पौलुस की प्रशंसा के सभी पहलू पाए जाते हैं बल्कि वह अन्य कई विवरणों को स्पष्ट करता है जो इस अनुच्छेद में पाए जाते हैं। और यह कोई चकित कर देने वाली बात नहीं है कि वह विचार है परमेश्वर का राज्य।

उदाहरणस्वरूप, पद 4 और 5 में पौलुस ने कुछ लोगों को पूर्वनिर्धारित करके परमेश्वर के विशेष लोग बनाने के लिए उसकी प्रशंसा करते हुए परमेश्वर को उसके सर्वोच्च राज्य के लिए सम्मान दिया। पद 9 और 10 में पौलुस ने संपूर्ण सृष्टि पर परमेश्वर के सर्वोच्च शासन के लिए भी उसकी प्रशंसा की जो अंत में सब वस्तुओं को मसीह की प्रधानता में ले आएगा।

इससे बढ़कर, पद 5-7 में पौलुस ने अपने लोगों के लिए परमेश्वर की भलाई की प्रशंसा की। परमेश्वर ने अपने लोगों को स्वीकार करके, छुटकारा देके और क्षमा करके अपनी दया को प्रदर्शित किया। सामान्यत: प्राचीन राजा अपनी प्रजा के लिए भलाइयां करते थे, यद्यपि परमेश्वर द्वारा की गई भलाई किसी भी मनुष्य द्वारा दिए गए भलाई के प्रस्ताव से कहीं बढ़कर होती है।

और पद 14 में पौलुस ने मसीह में हमारे उत्तराधिकार के लिए परमेश्वर की प्रशंसा की। अध्याय 5:5 में यह परमेश्वर के राज्य से संबंधित है जहां पौलुस ने हमारे उत्तराधिकार को "परमेश्वर और मसीह के राज्य में उत्तराधिकार" के रूप में पहचाना, क्योंकि उत्तराधिकार के केवल राज्य के नागरिकों को ही प्राप्त होते हैं।

प्रार्थना

इस परिचयात्मक प्रशंसा के पश्चात् अगला भाग पौलुस के पाठकों के लिए प्रार्थना है जो इफिसियों 1:15-23 में पाया जाता है।

पौलुस की प्रार्थना में मूल रूप से तीन भाग पाए जाते हैं- उन विश्वासियों के प्रति, जिनको उसने पत्री लिखी, आभार-प्रदर्शन; द्विरूपी विनती कि पवित्र आत्मा उन्हें प्रकाशित करे; और उस प्रकाशन का विस्तरित स्पष्टीकरण।

पौलुस की प्रार्थना उन सभी पहलुओं को दोहराती है जिनको हमने प्रशंसा के पिछले भाग में देखा था। इसमें पद 17 में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के कार्यों को स्पष्ट रूप से सम्मान देते हुए उसका मजबूत त्रित्ववादी धर्मविज्ञान पाया जाता है। पद 19 और 20 में यह बल देता है कि उद्धार यीशु मसीह के

बलिदान के द्वारा मिलता है। पद 17-19 में इसकी मुख्य विनती उस प्रकाश के रूप में सुसमाचार के और अधिक प्रकाशन मिलने की है जो विश्वासियों को प्राप्त आशीषों को समझने में उनकी सहायता करता है। और यह पद 18 में भावी महिमा की आशा के बारे में बात करता है।

और प्रशंसा के भाग के समान, परमेश्वर के राज्य का विशाल विचार उस संदर्भ को प्रदान करता है जिसमें इन सभी अन्य विचारों का उल्लेख किया गया है।

जब हमने पौलुस की प्रशंसा में परमेश्वर के राज्य के विषय की जांच की थी तो हमने तीन विवरणों पर ध्यान दिया था- परमेश्वर का सर्वोच्च राज्य जिसमे उसकी सामर्थ और अधिकार शामिल होते हैं; परमेश्वर की भलाई, जिसमें वे सब भली वस्तुऐं शामिल होती हैं जो वह हमें सेंतमेंत देता है; और मसीह में हमारा उत्तराधिकार, जिसमें अपने लोगों के साथ बांधी गई परमेश्वर की वाचा की सभी आशीषें शामिल होती हैं। और यह चकित कर देने वाली बात नहीं कि राज्य के ये तीनों पहलू उसकी प्रार्थना में भी विद्यमान हैं।

पौलुस ने परमेश्वर की सर्वोच्चता का उल्लेख किया जब पद 19 में उसने पिता की "अतुल्य सामर्थ" और "अपार शक्ति" के बारे में बात की, और जब उसने पद 21 में सभी अन्य शासकों के ऊपर मसीह को बैठाए जाने की बात की।

और उसने परमेश्वर की भलाई के बारे में बात की जब उसने पद 19 में उल्लेख किया कि परमेश्वर की सामर्थ "हमारे लिए है जो उस पर विश्वास करते हैं," और तब भी जब पद 22 और 23 में उसने कहा कि मसीह कलीसिया के लाभ के लिए राजा के समान शासन करता है।

और अंत में पद 18 में पौलुस ने "पवित्र लोगों में मसीह के उस महिमामय उत्तराधिकार" के बारे में सीधी बात की, जो वह आशा है जिसके लिए विश्वासियों को बुलाया गया है। पौलुस हमारी आशा के रूप में मसीह के उत्तराधिकार के बारे में बात कर पाया क्योंकि, जिस प्रकार वह पत्री के मुख्य भाग में सिखाता है, मसीह अपने उत्तराधिकार को हमारे साथ बांटता है जिससे उसका उत्तराधिकार हमारा उत्तराधिकार भी बन जाता है। इसके साथ-साथ, यह व्यवस्थाविवरण 9:26-29 में पाए जाने वाले पुराने नियम के विचार की ओर संकेत करता है, कि इस्राएल का राज्य परमेश्वर का अपना उत्तराधिकार था, और कि राज्य के लोगों ने इस प्रबंध के द्वारा महान् आशीष प्राप्त की थी।

मुख्य भाग

पौलुस की प्रशंसा और प्रार्थना में राज्य के केन्द्र को देखने के पश्चात् हमें इस पत्र के मुख्य भाग की ओर मुड़ना चाहिए जो अध्याय 2:1 से 6:20 में पाया जाता है। यह भाग एक ओर परमेश्वर के धर्मी राज्य और दूसरी ओर दुष्टात्माओं एवं पापी मनुष्यों के पापमय राज्य के बीच विपरीतता पर केन्द्रित है।

इफिसियों को लिखी पौलुस की पत्री की रूपरेखा बनाने के कई तरीके हैं। परन्तु इस अध्याय में हमारे केन्द्र के अनुसार हमारी रूपरेखा बल देगी कि किस प्रकार मुख्य भाग के विषय परमेश्वर के राज्य के विषय से संबंधित हैं। हम इस भाग को तीन प्राथमिक खण्डों में विभाजित करेंगे- पहला, अध्याय 2:1-22 में राज्य में नागरिकता पर पौलुस की शिक्षा; दूसरा, अध्याय 3:1-21 में राज्य के प्रबंधन पर उसका स्पष्टीकरण; और तीसरा, अध्याय 4:1-6:20 में राज्य में रहने की नियमसंहिता। हम इन सभी खण्डों को ध्यान से देखेंगे, तो आइए 2:1-22 में ज्योति के राज्य में नागरिकता पर ध्यान देते हुए हम आरंभ करें।

नागरिकता

परमेश्वर के ज्योति के राज्य में नागरिकता पर पौलुस की शिक्षा को तीन खण्डों में विभाजित किया जा सकता है। पहला, इफिसियों 2:1-3 इस बात पर ध्यान देता है कि पापी मनुष्य जाति का जन्म अंधकार के राज्य में होता है और वे स्वभाव से परमेश्वर के शत्रु होते हैं। दूसरा, इफिसियों 2:4-10 उस क्रिया का वर्णन करता है कि किस प्रकार परमेश्वर हमें अंधकार के राज्य से निकाल कर ज्योति के राज्य पहुंचाने के

द्वारा अपने राज्य की नागरिकता हमें प्रदान करता है। तीसरा, इफिसियों 2:11-22 ज्योति के राज्य में हमारी नागरिकता की प्रकृति पर चर्चा करता है।

पहला, पौलुस ने अपने पाठकों को स्मरण करवाया कि मानवजाति पापमय और पतित है। हम आत्मिक रूप से मृत हैं; हमारे स्वभाव बुरे हैं; हम परमेश्वर के शत्रुओं की सेवा करते हैं, और परिणामस्वरूप हम दण्ड के दिन परमेश्वर के क्रोध का सामना करने वाले हैं। सुनें इफिसियों 2:1-3 में उसने किस प्रकार पाप में गिरी मानवजाति का वर्णन किया :

> और तुम जो अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे, जिसमें तुम पूर्व में इस संसार के मार्गों के अनुसार, आकाश के अधिकार के शासक के अनुसार... चलते थे, जिसमें हम सब भी पूर्व में हमारे शरीर की अभिलाषाओं में जीवनयापन करते थे, और शरीर एवं विचारों की लालसाएं पूरी करते थे, और शेष लोगों के समान स्वभावत: क्रोध की सन्तान थे। **(इफिसियों 2:1-3)**

पाप में गिरे मनुष्य परमेश्वर के शत्रु हैं। परमेश्वर द्वारा उद्धार पाने से पूर्व हम हमारी इच्छा से पापमय स्वभाव के अनुसार चलते हैं और शैतान की सेवा करते हैं जो आकाश के राज्य का शासक है।

परन्तु हमने पूर्व में इस अध्याय में देखा है कि परमेश्वर ने पहले से निर्धारित किया है कि कुछ मनुष्य उद्धार प्राप्त करेंगे। अत: इफिसियों 2:4-10 में पौलुस इस विषय की ओर मुड़ा कि अपने राजकीय अधिकार का प्रयोग हमें अंधकार के राज्य से ज्योति के राज्य में लाने के लिए करता है। इस प्रक्रिया के भाग के रूप में वह हमारी आत्माओं को नया करता है जिससे हम आत्मिक रूप से जीवित हो जाते हैं। और वह मसीह में हमारी पुन: रचना करता है जिससे हमारे भीतर वैसे स्वभाव आ जाते हैं जिनसे परमेश्वर प्रेम करता है। वह हमारे द्वारा किए जाने वाले भले कार्यों को भी पूर्वनिर्धारित करता है जिससे हम उसके शत्रुओं की नहीं बल्कि परमेश्वर की सेवा करें। और फलस्वरूप, हम आने वाले युग में परमेश्वर के क्रोध और दण्ड की अपेक्षा अतुल्य महिमा की प्रतीक्षा करते हैं।

इस खण्ड में पौलुस द्वारा संबोधित किया गया अंतिम विषय यह था कि किस प्रकार परमेश्वर ने अपने सर्वोच्च शासन में यहूदियों और गैरयहूदियों को एक राज्य में लाने वाले पुराने नियम के आदर्श को पूरा किया है। इस आदर्श का उल्लेख पूरे पुराने नियम में किया गया है।

उदाहरण के तौर पर भजन 22:27-28 में दाऊद ने परमेश्वर के भावी राज्य के इस दर्शन को प्रकट किया :

> पृथ्वी के सब दूर दूर देशों के लोग उसको स्मरण करेंगे और उसकी ओर फिरेंगे; और जाति जाति के सब कुल तेरे साम्हने दण्डवत् करेंगे, क्योंकि राज्य यहोवा ही का है, और सब जातियों पर वही प्रभुता करता है। **(भजन 22:27-28)**

पौलुस के दिनों में गैरयहूदी मसीहियों की स्थिति बहुत ही विवादास्पद विषय था। यहूदी मसीहियों ने सामान्यत: गैरयहूदियों के हृदयपरिवर्तन पर आपत्ति नहीं की थी। परन्तु उनमें से कुछ महसूस करते थे कि गैरयहूदी दूसरे दर्जे के मसीही थे।

मसीह के आगमन से पूर्व यहूदियों को परमेश्वर के राज्य में प्राथमिक तरजीह दी जाती थी। परमेश्वर के वाचा के लोगों में प्राथमिक रूप से इस्राएल राष्ट्र के लोग होते थे, और वाचा की संपूर्ण आशीषें स्वतंत्र यहूदी पुरुषों को मिलती थीं। पौलुस पुराने नियम के विश्वास के इस सत्य को जानता था। परन्तु प्रेरितों के माध्यम से नया नियम सिखाता है कि सभी विश्वासी- चाहे यहूदी हों या गैरयहूदी, पुरुष या स्त्री, दास या स्वतंत्र- केवल मसीह के साथ संयोजन से ही अनन्त वाचा की आशीषों को प्राप्त करते हैं। मसीह में,

प्रत्येक विश्वासी को ऐसे माना जाता है जैसे कि वह स्वयं यीशु, वह स्वतंत्र यहूदी जिसने परमेश्वर की वाचा का पालन सिद्धता से किया और वाचा की सभी आशीषें प्राप्त कीं, के रूप में माना जाता है।

फलस्वरूप, यहूदियों और गैरयहूदियों के बीच पाए जाने वाली पुरानी भिन्नताएं पुरानी हो गई हैं। क्योंकि हर एक एक ही प्रकार से उद्धार प्राप्त करता है, नया स्तर बिना किसी जातिगत भेदभाव के प्रत्येक नागरिक के लिए समान पद और समान व्यवहार है। और इसी कारण ज्योति के राज्य के सभी नागरिक समान अधिकारों और सौभाग्यों, जिसमें परमेश्वर के पास पूर्ण पहुंच भी शामिल है, के साथ पूर्ण नागरिक हैं। जिस प्रकार पौलुस ने इफिसियों 2:13-19 में लिखा :

> परन्तु अब तुम जो पूर्व में दूर थे मसीह यीशु में... निकट लाए गए हो... इसलिए अब तुम अजनबी और विदेशी नहीं, परन्तु पवित्र लोगों के सहवासी और परमेश्वर के परिवार (के सदस्य) हो। (इफिसियों 2:13-19)

अब जब हमने परमेश्वर के ज्योति के राज्य में नागरिकता के विचार को देख लिया है, तो हमें राज्य के प्रबंधन पर पौलुस की शिक्षाओं की ओर मुड़ना चाहिए, जिनका वर्णन उसने इफिसियों 3:21 में किया है।

प्रबंधन

यह बात तो जाहिर है कि हर राज्य में किसी न किसी प्रकार की प्रबंधक संरचना की आवश्यकता होती है। राज्य अच्छी तरह से कार्य नहीं कर पाएंगे यदि उनमें केवल राजा और नागरिक ही हों। अन्य प्रशासकीय कार्यालयों का होना आवश्यक है जिनके द्वारा राजा अपने राज्य का संचालन करता है। सामान्य मानवीय प्रशासनों में भिन्न-भिन्न स्तरों और प्रकारों का नेतृत्व शामिल होता है, जैसे कि वे लोग जो नियम बनाते हैं, जो उन नियमों को लागू करते हैं, और वे जो नियमों के उल्लंघन का न्याय भी करते हैं। और ऐसा ही परमेश्वर के ज्योति के राज्य में भी पाया जाता है, विशेषकर जब यह कलीसिया में प्रकट होता है। बाइबल सिखाती है कि कलीसियाओं का संचालन प्राचीनों द्वारा होना चाहिए और ये प्राचीन एक-दूसरे के प्रति और परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी होते हैं।

पौलुस के दिनों में झूठे शिक्षक कलीसिया की अधिकार संरचना को चुनौती दे रहे थे। वास्तव में, यरुशलेम में उसकी गिरफ्तारी से पूर्व पौलुस ने इफिसियों के प्राचीनों को चेतावनी दी थी कि झूठे शिक्षक उनके ही स्थानों से उठ खड़े होंगे। प्रेरितों के काम 20:28-30 में लूका ने उन शब्दों को लिखा है जो पौलुस ने इफिसियों के प्राचीनों से कहे थे :

> इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस पर पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है... मैं जानता हूँ, कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी मेढ़ी बातें कहेंगे। (प्रेरितों के काम 20:28-30)

पौलुस जानता था कि झूठे शिक्षक उठ खड़े होंगे और वे कलीसिया को परेशान करेंगे। इसलिए उसने प्राचीनों को इन झूठे शिक्षकों से चौकसी रखने के निर्देश दिए।

परन्तु किस बात ने पौलुस को अधिकार दिया कि वह प्राचीनों को यह कार्य सौंपे और झूठे शिक्षकों की निन्दा करे? पौलुस के दिनों में एक और कलीसियाई कार्यभार था जिसके माध्यम से परमेश्वर अपने राज्य का संचालन करता था, वह जो बुनियादी कार्यभार के रूप में कार्य करता था, पर आज जिसका अस्तित्व नहीं है। और यह प्रेरित का कार्यभार था। यह उन लोगों को दिया जाता था जिनको स्वयं परमेश्वर के द्वारा चुना और प्रशिक्षित किया गया था और जिन्होंने पुनर्जीवित प्रभु यीशु मसीह को देखा था,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पौलुस जैसे व्यक्ति। प्रेरितों को परमेश्वर के अधिकार के साथ भरा गया था और वे प्राचीनों के साथ-साथ पूर्ण कलीसिया के अधिकार रखते थे।

इफिसियों 3:2-7 में पौलुस ने परमेश्वर के राज्य के प्रबंधन के संबंध में अपने प्रैरितिक अधिकार का वर्णन किया। वहां उसके शब्दों को सुनें :

> तुमने वास्तव में परमेश्वर के अनुग्रह की उस योजना के बारे में सुना है, जो तुम्हारे लिए मुझे सौंपी गई है, कि प्रकाशन के द्वारा रहस्य मुझ पर प्रकट किया गया... जिसे अन्य युगों में मनुष्यजाति के पुत्रों पर इस प्रकार नहीं दर्शाया गया था, जिस प्रकार आत्मा के द्वारा उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर अब प्रकट किया गया है... मैं परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार सेवक बना, जो उसकी सामर्थ के कार्य करने के द्वारा मुझे दिया गया। (इफिसियों 3:2-7)

प्रेरितों को परमेश्वर की ओर से विशेष अनुग्रह प्रदान था जो उनको उनकी सेवकाई में सामर्थ देता था, और परमेश्वर की ओर से विशेष प्रकाशन भी प्राप्त था जिसने उन्हें त्रुटिरहित सत्य सिखाया था। और उन्होंने परमेश्वर से यह कार्य मिला कि वे कलीसिया को यह प्रकाशन सिखाएं। अत: एक प्रेरित के रूप में यह पौलुस का उत्तरदायित्व और अधिकार था कि वह परमेश्वर के राज्य के नियम उसके नागरिकों को सिखाए और उनकी निन्दा करे जो उसके विरुद्ध खड़े होते हैं।

परमेश्वर ने पौलुस को पृथ्वी पर अपने आधिकारिक प्रतिनिधि, अपने प्रेरित के रूप में नियुक्त किया था। और इस प्रेरिताई ने पौलुस के वचन को अधिकारपूर्ण बना दिया था, जैसे कि यह स्वयं परमेश्वर के द्वारा बोला गया हो। परन्तु इफिसियों को लिखी उसकी पत्री में इस बिंदू पर पौलुस का अधिकार इतना महत्वपूर्ण क्यों था? इसे सरल रूप में बताएं तो कलीसिया को यह जानना आवश्यक है कि वह किस पर भरोसा करे। यदि हमें परमेश्वर को प्रसन्न करना है, तो हमें जानकारी रखना आवश्यक है। हमें यह जानना आवश्यक है कि परमेश्वर हमसे क्या मांग करता है। परन्तु पौलुस के दिनों में बहुत सारी झूठी शिक्षाएं फैल रही थीं और यह जानना वास्तव में कठिन था कि परमेश्वर की मांगे वास्तव में क्या थीं। झूठे शिक्षकों ने एक बात कही तो कलीसिया के स्थापित अगुवों ने दूसरी बात कही।

पौलुस ने अपने प्रैरितिक अधिकार का प्रयोग करके इस समस्या का समाधान कर दिया। उसने अपने पाठकों को स्मरण दिलाया कि क्योंकि वह एक प्रेरित है इसलिए उसका अधिकार और उसके विचार दूसरों से बड़े हैं। कोई झूठा शिक्षक प्रेरित होने का दावा नहीं कर सकता, और इसलिए कोई झूठा शिक्षक पौलुस के समान विचार को प्राप्त नहीं कर सका एवं न ही स्वर्गीय अधिकार के साथ बोल सका। दूसरी ओर पौलुस ने परमेश्वर के लोगों को सच्चाई की ओर प्रेरित करने के लिए उनसे परमेश्वर के वचन बोले।

बुद्धिमानी रूप में राज्य के प्रबंधन पर पौलुस की शिक्षा उसके अधिकार की स्थापना के साथ नहीं परन्तु प्रार्थना के साथ समाप्त हुई, जो इफिसियों 3:14-21 में पाई जाती है। पौलुस इतने लम्बे समय से एक मिशनरी, पासवान और प्रेरित था कि वह इस बात को जानता था कि लोग सिर्फ सुनकर सत्य को पहचानते या स्वीकार नहीं करते हैं। वह जानता था कि उसके पास जीवन के शब्द हैं परन्तु वह यह भी जानता था कि वह पापी मनुष्यों को उन पर विश्वास करने के लिए बाध्य नहीं कर सकता। और इसलिए उसने प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा उनके मनों को प्रज्ज्वलित करे ताकि वे उसके अधिकार और उसकी शिक्षा को स्वीकार करें। और उसने प्रार्थना की कि इसके फलस्वरूप वे इस प्रकार से जीवन जिएं जो परमेश्वर के राज्य का निर्माण करें और उसके नागरिकों को आशीषित करें।

अब जब हमने परमेश्वर के राज्य के संबंध में नागरिकता और प्रबंधन के विचारों को देख लिया है, तो हमें ज्योति के राज्य में जीने की नियमसंहिता की ओर मुड़ना चाहिए जो 4:1-6:20 में पाई जाती है।

जीवन की नियमसंहिता

राज्य में जीवन की नियमसंहिता में मसीही आचरण पर अनेक भिन्न-भिन्न निर्देश पाए जाते हैं। परन्तु इसे निम्नलिखित रूप में सारगर्भित किया जा सकता है- इफिसियों 4:1-16 में हम राज्य में कलीसियाई संगठन के बारे में पढ़ते हैं; 4:17-5:20 में राज्य को शुद्ध करना; 5:21-6:9 में राज्य में पारिवारिक संगठन; और अंत में 6:10-20 में राज्य का युद्ध।

इफिसियों 4:1-26 में राज्य में कलीसियाई संगठन का खण्ड प्राथमिक रूप से कलीसिया में अगुवाई, प्रभाव और अधिकार के पदों पर केन्द्रित है। और पौलुस की शिक्षाएं उन मार्गों पर बल देती हैं जिसमें ये भूमिकाएं सबकी भलाई के लिए एक साथ मिलकर कार्य करती हैं। नागरिकों को एक-दूसरे से द्वेष नहीं रखना है बल्कि उनके भाइयों और बहनों द्वारा किए गए योगदान की सराहना करनी है। जब हरेक व्यक्ति दिए गए अपने कार्यों को पूरा करता है तो यह मसीह को लाभ पहुंचाता है। और क्योंकि यह मसीह को लाभ पहुंचाता है इसलिए यह पूरे राज्य को लाभ पहुंचाता है।

इफिसियों 4:8 में इस विषय पर पौलुस के शब्दों को सुनें :

> इसलिए वह कहता है: "ऊँचाई पर चढ़कर उसने बन्दियों को बाँध लिया और मनुष्यों को दान दिए।" (इफिसियों 4:8)

इस अनुच्छेद में पौलुस ने भजन 68:18 का उल्लेख किया जो यहोवा को युद्धभुमि से लौटते हुए जयवंत राजा के रूप में चित्रित करता है। भजन 68 में यहोवा अपने द्वारा पराजित शत्रुओं से युद्ध की लूट को प्राप्त करता है। परन्तु पौलुस ने इस बात पर ध्यान दिया कि यहोवा उन वस्तुओं का क्या करता है। प्राचीन राजाओं के समान वह उसे अपनी सेना में बांट देता है। अत: बहुत ही अधिक वास्तविक भाव में ये वस्तुएं न केवल मसीह को लाभ प्रदान करती हैं बल्कि उसके राज्य के लोगों को भी।

इफिसियों 4:7-12 में पौलुस ने इनमें से कुछ वस्तुओं का वर्णन किया :

> परन्तु हम में से प्रत्येक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह प्रदान किया गया... उसने कुछ को प्रेरित, और कुछ को भविष्यद्वक्ता, और कुछ को सुसमाचारक और कुछ को रखवाले और शिक्षकों के रूप में नियुक्त किया, कि मसीह की देह को मजबूत करने के लिए पवित्र लोग सेवा के कार्य के योग्य हो जाएं। (इफिसियों 4:7-12)

मसीह ने अपने उपहारों को इस प्रकार से वितरित किया है कि वे राज्य के नागरिकों को परस्पर सेवा करने के योग्य बनाते हैं। और इस सेवा के द्वारा मसीह का राज्य बढ़ता और मजबूत होता है।

अध्याय 4:17-5:20 उसमें पाए जाने वाले भ्रष्टाचार से ज्योति के राज्य को शुद्ध करने के विषय को स्पष्ट करता है। यह भ्रष्टाचार या पाप हमारे भीतर तब पैदा हुआ और पला जब हम शैतान के अंधकार के राज्य के नागरिक थे। यह हमारे पुराने, पापमय स्वभाव का उत्पाद है जो ज्योति के नागरिक होने के बाद भी हमारे भीतर आ जाता है। परन्तु ज्योति के राज्य के भीतर रहने वाले विश्वासियों में नया स्वभाव भी पाया जाता है जिस पर वे पाप पर विजय पाने के लिए निर्भर हो सकते हैं।

जिस प्रकार पौलुस ने इफिसियों 4:22-24 में लिखा :

> (तुमने शिक्षा पाई थी) कि तुम पूर्व की जीवनशैली के पुराने मनुष्यत्व को त्याग दो जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट हो रहा है और अपने मन में आत्मिक रूप से नए बन जाओ और नए मनुष्यत्व को पहिन लो जो परमेश्वर के सत्य की धार्मिकता और पवित्रता के अनुसार रचा गया है। (इफिसियों 4:22-24)

परमेश्वर का राज्य जितना संभव हो सके उतना शुद्ध होना चाहिए; इसे अपने राजा के चरित्र को दर्शाना चाहिए। और यह पूरे राज्य के लाभ के लिए है। आखिरकार, परमेश्वर नैतिक शुद्धता को आशीष और पुरस्कार देता है। अत: पापों से दूर रहने के द्वारा और भले कार्य करने के द्वारा नागरिक राज्य की आशीषमय स्थिति को बढ़ाते हैं और इसमें अपने उत्तराधिकार को निश्चित करते हैं।

ज्योति के राज्य में पारिवारिक संगठन के विषय को इफिसियों 5:21-6:9 में दर्शाया गया है। यह खण्ड परिवारों में विद्यमान उचित अधिकार संरचना को बनाए रखने को दर्शाता है और उस मार्ग को भी दर्शाता है जिसमें अधिकार संबंध में प्रत्येक समूह को परस्पर संबंधित होना है।

अनेक रूपों में यह खण्ड कलीसियाई संगठन पर दी गई पौलुस की शिक्षाओं से मिलती है जो 4:1-16 में पाई जाती हैं। उस खण्ड में पौलुस ने सिखाया था कि प्रत्येक को उनका सम्मान व आदर करना चाहिए जो कलीसिया में अगुवाई, प्रभाव और अधिकार के पदों पर पाए जाते हैं, और उसने पदों पर रहने वालों को सिखाया कि वे सबके लाभ के लिए कार्य करें।

पारिवारिक संगठन के इस खण्ड में पौलुस ने पतियों और पत्नियों, अभिभावकों और संतानों, एवं स्वामियों और दासों के बीच अधिकार संरचनाओं की पुष्टि की। और उसने संबंधों के प्रत्येक समूह को इस प्रकार से कार्य करने की शिक्षा दी जो सब समूहों को सम्मान दे। और फिर से कारण यही था कि ये संरचनाएं परमेश्वर के राज्य में जीवन के महत्व को बढ़ाएं।

अंत में, 6:10-20 में पौलुस ने ज्योति के राज्य और अंधकार के राज्य के बीच युद्ध के विषय में बात की। यहां, पौलुस ने इस विषय में बात की कि ज्योति के राज्य में प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर की सेना में अंधकार के राज्य के विरुद्ध आत्मिक युद्ध लड़ने की सेवा करने के लिए बुलाया गया है।

पौलुस ने इफिसियों 6:11 और 12 में पत्री के मुख्य भाग के अंतिम खण्ड को सारगर्भित किया, जहां उसने ये शब्द लिखे :

> परमेश्वर के समस्त हथियारों से सुसज्जित हो जाओ ताकि तुम शैतान की योजनाओं के समक्ष स्थिर रह सको। क्योंकि हमारा युद्ध लहू और मांस के विरुद्ध नहीं अपितु शासकों, अधिकारियों, अंधकार की सांसारिक शक्तियों एवं दुष्ट की उन आत्मिक शक्तियों के विरुद्ध है, जो आकाश में हैं। (इफिसियों 6:11-12)

शैतान और उसका राज्य कलीसिया और ज्योति के राज्य के विरुद्ध युद्ध करता है और हमारा स्वर्गीय राजा इस लड़ाई में हमारी वफादारी की मांग करता है। यह निश्चित करने के लिए कि हम हमारे शत्रुओं के विरुद्ध खड़े रह सकें वह अपने शस्त्रों से हमें सुसज्जित करता है और अपने वचन से हमें भरता है।

अंतिम अभिनंदन

इफिसियों को लिखी पौलुस की पत्री का अंतिम भाग उसकी समाप्ति का खण्ड है जो 6:21-24 में पाया जाता है। इस लघु अनुच्छेद में पौलुस ने अंतिम आशीषें दी और यह दर्शाया कि तुखिकुस यह पत्री पहुंचाएगा।

आधुनिक प्रयोग

अब जब हमने पौलुस द्वारा इफिसियों को लिखी पत्री की पृष्ठभूमि की जांच कर ली है और उसकी संरचना एवं विषयवस्तु को देख लिया है, तो हम मूल रूप से इफिसियों को दी गई पौलुस की शिक्षाओं के आधुनिक प्रयोग को संबोधित करने के लिए तैयार हैं।

इफिसियों को लिखी पौलुस की पत्री का हमारा आधुनिक प्रयोग तीन भागों में विभाजित होगा, जो परमेश्वर के राज्य के छोटे से विशाल पहलुओं की ओर बढ़ेगा। पहले हम राजा को सम्मान देने के बारे में बात करेंगे। दूसरा, हम राज्य के निर्माण पर चर्चा करेंगे। और तीसरा, हम ब्राह्मांड को जीतने के विषय को संबोधित करेंगे। आइए, राजा को सम्मान देने के विषय के साथ आरंभ करें।

राजा को सम्मान देना

जैसा कि हम देख चुके हैं, इफिसियों को लिखी पौलुस की पत्री इस विचार को दर्शाती है कि परमेश्वर पूरी सृष्टि के ऊपर स्वर्गीय राजा है, और विशेषकर अपने लोगों के राज्य पर। और हमारे स्वर्गीय राजा ने हमारे लिए बहुत से ऐसे कार्य किए हैं जिनका प्रत्युत्तर हमें उसको सम्मान देकर करना चाहिए, विशेषकर धन्यवाद, आज्ञाकारिता और वफादारी के साथ।

अब प्राचीन समाजों में राजाओं और उनके लोगों के व्यवहार को ध्यान में रखते हुए पौलुस ने परमेश्वर की राजकीय भलाई का वर्णन प्रेम के रूप में किया। और उसने इसी प्रकार उसके प्रति हमारे उत्तरदायित्वों का वर्णन भी किया। उदाहरण के तौर पर, इफिसियों 2:4-7 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

> परन्तु परमेश्वर ने, जो करुणा में धनी है, अपने विशाल प्रेम के कारण जो प्रेम उसने हमसे किया, और हम जो अपराधों में मृत थे, उसने हमें मसीह के साथ जीवित किया... और उसने हमें मसीह के साथ पुनर्जीवित किया और स्वर्ग में उसके साथ बैठाया ताकि वह आगामी युगों में मसीह यीशु में हम पर की गई कृपा में अपने अनुग्रह के अपार धन को दर्शा सके। (इफिसियों 2:4-7)

यह अनुच्छेद यह स्पष्ट करते हुए पौलुस के विशाल तर्क का हिस्सा है कि किस प्रकार परमेश्वर हमें अपने राज्य के नागरिक बनाता है। और इन पदों में पौलुस का तर्क है कि जब परमेश्वर हमें नया जन्म प्रदान करता है, तो अपने राज्य में हमें लेकर आता है, अधिकार और सम्मान की स्थिति में हमें रखता है और हमें हमारा उत्तराधिकार प्रदान करता है, और इनके द्वारा वह अपना प्रेम प्रदर्शित करता है।

प्राचीन जगत में राजा प्राय: अपने अधीनों के प्रति प्रेम व्यक्त करते थे और वे अपने अधीन लोगों से अपने प्रति प्रेम की मांग भी करते थे। इस राष्ट्रीय संदर्भ में यह शब्द प्रेम, विश्वासयोग्यता और भक्ति को दर्शाता है, लगभग उसी समान जिस प्रकार आज भी हम अपने देश से प्रेम करने के विषय में बात करते हैं। और इसकी अभिव्यक्ति मुख्यत: राजा की ओर भलाई और सुरक्षा और उसके अधीन लोगों की ओर से आज्ञाकारिता और वफादारी के द्वारा की जाती थी।

और इसी बात को हम अपने लोगों के प्रति परमेश्वर के प्रेम के विषय में पौलुस के वर्णन में देखते हैं। सुसमाचार के ऐतिहासिक तथ्य प्रमाणित करते हैं कि परमेश्वर अपने राज्य के लोगों के प्रति समर्पित है, और कि वह हमें बहुत महत्व देता है। हमारे प्रति उसकी विश्वासयोग्यता का वर्णन उसकी दया और सुरक्षा में प्रदर्शित किया जाता है, जैसा कि उसने हमारे पूर्वनिर्धारण, हमारे लिए मसीह की मृत्यु, हमारी आत्माओं के नए जन्म, परमेश्वर के राज्य में हमारी नागरिकता, स्वर्गीय राजा मसीह के साथ हमारे संयोजन, और हमें भविष्य में मिलने वाली महिमा में व्यक्त किया है। और क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिए इन सब अद्भुत कार्यों को किया है, तो बदले में उसको सम्मान देना हमारा उत्तरदायित्व है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इफिसियों 3:17-4:1 में पौलुस की प्रार्थना को सुनें :

> (मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हें वह सामर्थ मिले) कि तुम... समझ सको कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई और गहराई कितनी है, और ज्ञान से परे मसीह के उस प्रेम को समझ सको... अब... उसकी महिमा कलीसिया में और मसीह यीशु में वंश दर वंश युगानयुग होती रहे। आमीन। इसलिए, मैं जो प्रभु में बन्दी हूँ, तुमसे आग्रह करता हूँ कि उस बुलाहट के योग्य चाल चलो जिसमें तुम बुलाए गए थे। (इफिसियों 3:17-4:1)

इस अनुच्छेद में पौलुस ने परमेश्वर के प्रेम से दो प्रयोगों को निकाला। पहला, उसने परमेश्वर को महिमा देते हुए स्तुतिगान के द्वारा परमेश्वर को सम्मान दिया। दूसरा, पौलुस ने अपने पाठकों को उत्साहित किया कि वे योग्य जीवन जीने के द्वारा अपनी आज्ञाकारिता से परमेश्वर को सम्मान दें।

हम परमेश्वर को सम्मान देने वाले इन दोनों मार्गों को ध्यान से देखेंगे; पहले हमारे द्वारा परमेश्वर को स्तुति और आराधना देने के साथ हम आरंभ करेंगे और फिर उसके प्रति हमारे जीवनों की आज्ञाकारिता की ओर बढ़ेंगे। आइए, पहले हम स्तुति और आराधना की ओर मुड़ें।

स्तुति और आराधना

इफिसियों 5:19-20 में पौलुस ने इन शब्दों को लिखते हुए स्पष्ट रूप से अपने पाठकों को स्तुति और आराधना के द्वारा परमेश्वर को सम्मान देने का निर्देश दिया :

> और परस्पर भजन, स्तुति-गायन और आत्मिक गीत गाते और अपने हृदय में प्रभु के लिए गाते और संगीत बजाते रहो; और सर्वदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में पिता परमेश्वर को धन्यवाद दो। (इफिसियों 5:19-20)

मसीहियों को परमेश्वर की सभी आशीषों के लिए आभारी रहना चाहिए। और हमें हमारे आभार को हमारे हृदय में भजनों, गीतों, आत्मिक गान और संगीत के द्वारा व्यक्त करना चाहिए। ये सभी स्तुति और आराधना के प्रकार हैं, चाहे हम इन्हें बाहरी रूप से दूसरों के समक्ष प्रकट करें या आंतरिक रूप से केवल प्रभु के समक्ष।

परमेश्वर की स्तुति करने का निर्देश देने के अतिरिक्त पौलुस ने हमारे लिए स्तुति करने के अनेक नमूने शामिल किए हैं, जैसे इफिसियों 1:3-14 में उसकी आरंभिक प्रशंसा और इफिसियों 3:14-21 में उसकी स्तुतिरूपी प्रार्थना। ये दोनों अनुच्छेद दिखाते हैं कि एकसमान प्रशंसा और स्तुति के द्वारा परमेश्वर को किस प्रकार सम्मान दिया जाना चाहिए।

जैसे कि हम देख चुके हैं, इन दोनों खण्डों में पौलुस ने त्रिएकता के प्रत्येक व्यक्तित्व के कार्य पर ध्यान दिया- यीशु का बलिदान, हमारे लिए परमेश्वर का प्रकाशन और भावी महिमा जिसकी योजना परमेश्वर ने हमारे लिए बना रखी है। और उसने इनका उल्लेख हम पर परमेश्वर के राजत्व के लिए उसके सम्मान के संदर्भ में किया, जिसमें उसने परमेश्वर के सर्वोच्च राज्य, हमारे प्रति उसकी भलाई और मसीह में हमारे उत्तराधिकार की बात की।

अब परमेश्वर को राजा के रूप में सम्मान देने के केवल यही स्वीकारयोग्य मार्ग नहीं है। इसके विपरीत, इफिसियों 5:19-20 में पौलुस ने सिखाया कि हमें हर बात के लिए परमेश्वर को सम्मान देना है, न केवल इन कुछ बातों के लिए। फिर भी, यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि हम स्तुति और आराधना में परमेश्वर को सम्मान दें, उन विशेष बातों के लिए जो परमेश्वर ने हमारे लिए की हैं, उसकी स्तुति करना सही है।

स्तुति और आराधना के अतिरिक्त पौलुस ने हमें हमारे स्वर्गीय राजा को सम्मान देने के रूप में उसकी आज्ञा मानने की शिक्षा भी दी है।

आज्ञाकारिता

परमेश्वर के प्रति हमारी आज्ञाकारिता को व्यक्त करने का एक तरीका सभी अन्य शक्तियों और अधिकारों को त्यागकर उसके प्रति पूरे जोश के साथ और निरन्तर रूप से वफादार बने रहना है। जिस प्रकार पौलुस ने इफिसियों 5:8-10 में लिखा :

> क्योंकि पूर्व में तुम अंधकार थे, परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, इसलिए ज्योति की सन्तान के समान चलो... परख लो कि प्रभु को क्या स्वीकार है। (इफिसियों 5:8-10)

हम शैतान के अंधकार के राज्य के नागरिक हुआ करते थे। परन्तु अब हमारी वफादारी परिवर्तित हो गई है। क्योंकि परमेश्वर ने हमें उद्धार प्रदान किया है, हम उसकी आज्ञाकारिता के ऋणी हैं; हम पर उसका यह ऋण है कि हम अंधकार के राज्य के पापमय मार्गों को पीछे छोड़ें और इस प्रकार जीवन जीएं जो हमारे नए प्रभु और राजा को प्रसन्न करें।

इफिसियों 6:24 में पौलुस ने इस वफादारी के बारे में पुन: लिखा, जहां उसने इस सशर्त आशीष को बोला :

> उन सब पर अनुग्रह होता रहे जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से अविनाशी प्रेम करते हैं। (इफिसियों 6:24)

प्रभु के प्रति हमारा प्रेम “अविनाशी,” कभी न समाप्त होने वाला, निरन्तर, भक्तिपूर्ण और दृढ़ होना चाहिए।

परमेश्वर हमारी पूर्ण भक्ति और हमारे पूर्ण समर्पण की मांग करता है। हमारे द्वारा अनेक ईश्वरों की आराधना में उसे भी जोड़ लेना कोई फल उत्पन्न नहीं करेगा; वह हमारी अविभाजित वफादारी की मांग करता है। और वह हमारी निष्क्रिय वफादारी नहीं चाहता, जैसे कि हम झूठे देवताओं से हट कर उसके राज्य की केवल आशीषों में ही बने रहें। नहीं, वह चाहता है कि हम उसकी सारी आज्ञाएं मानें, न केवल दूसरे देवताओं को त्यागना, बल्कि सक्रिय रूप से उन सभी भले कार्यों को करना जो उसने हमारे लिए निर्धारित किए हैं।

इफिसियों 2:8-10 में पौलुस के शब्द इस विषय में गहरे विचार प्रदान करते हैं :

> क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं अपितु परमेश्वर का दान है... क्योंकि हम उसकी रचना हैं और अच्छे कार्यों के लिए मसीह यीशु में रचे गए हैं जो परमेश्वर ने पूर्व से ही तैयार किए ताकि हम उनमें चलें। (इफिसियों 2:8-10)

परमेश्वर ने हमें केवल नाश होने से बचाने के लिए ही उद्धार प्रदान नहीं किया है, या केवल इसलिए कि हम उसके राज्य में आरामदायक जीवन का आनन्द उठाएं। बल्कि, परमेश्वर ने मसीह में हमारी नई रचना की है ताकि हम उसके द्वारा हमारे लिए दिए गए भले कार्यों को करते हुए उसके राज्य में फलदायी नागरिक बन जाएं।

परमेश्वर के राज्य में भले कार्य एक विशिष्ट भूमिका निभाते हैं- वे ऐसे साधन हैं जिनके द्वारा परमेश्वर अपने राज्य का विस्तार करता है और उसे शुद्ध करता है, महिमा प्राप्त करता है और अपने लोगों

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

के प्रति सेवकाई करता है। और पौलुस के अनुसार हमें उद्धार प्रदान करने में परमेश्वर का उद्देश्य इस बात को निश्चित करना था कि हम इन भले कार्यों को करें। अत: परमेश्वर के अनुग्रह के प्रति उचित प्रत्युत्तर उसके दासों और सेवकों के रूप में हमारी नियुक्ति को स्वीकार कर लेना है। यह उसके लक्ष्य को हमारे लक्ष्य, और उसके उद्देश्य को हमारे उद्देश्य के रूप में ग्रहण कर लेना है। इसीलिए पौलुस ने प्राय: अपने पाठकों को ऐसे योग्य रूप में जीवन जीने के लिए उत्साहित किया जो हमारे राजा और उसके राज्य के चरित्र को प्रतिबिम्बित करे।

अब जब हमने राजा को सम्मान देने के कुछ मार्गों पर चर्चा कर ली है, तो हमें राज्य के निर्माण में पौलुस की विधि की ओर मुड़ना चाहिए। जिस प्रकार परमेश्वर हमारी प्रेमपूर्ण स्तुति और आज्ञाकारिता को चाहता है, वह यह भी चाहता है कि हम पृथ्वी पर उसके राज्य का विस्तार करने और उसे बढ़ाने में उसकी सहायता करें।

राज्य का निर्माण

हमें यह समझाने कि पृथ्वी पर राज्य का निर्माण किस प्रकार करें, पौलुस ने कई रूपकों का प्रयोग किया। उनमें से प्रत्येक ने दर्शाया कि किस प्रकार परमेश्वर के राज्य के नागरिकों को एकदूसरे से और मसीह से संबंधित होना है, और यह भी कि परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने में हमें किस प्रकार एक-दूसरे का साथ देना है। हम दो ऐसे रूपकों का उल्लेख करेंगे। हम इस बात से आरंभ करेंगे कि किस प्रकार पौलुस ने राज्य की तुलना परमेश्वर के मंदिर से की।

इफिसियों 2:19-22 में गैरयहूदी मसीहियों को कहे पौलुस के शब्दों को सुनें :

> अब तुम... पवित्र लोगों के सहवासी और परमेश्वर के परिवार (के सदस्य) हो। और प्रेरितों एवं भविष्यद्वक्ताओं की नींव, जिसके कोने का पत्थर स्वयं मसीह यीशु है, पर निर्मित हो। जिसमें संपूर्ण रचना एक साथ जुड़कर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बन जाती है, जिसमें तुम भी आत्मा में परमेश्वर के निवास-स्थान के रूप में बनाए जा रहे हो। **(इफिसियों 2:19-22)**

पौलुस ने सिखाया कि गैरयहूदी मसीही यहूदी मसीही नागरिकों के समान स्तर में परमेश्वर के राज्य के पूर्ण नागरिक हैं। और इस बात पर बल देने के लिए उसने परमेश्वर के राज्य को एक भवन के रूप में दर्शाया जिसकी संरचना में प्रत्येक मसीही एक पत्थर है।

इस रूपक में मसीह का स्तर श्रेष्ठ है जो नींव के कोने का पत्थर है वह जिस पर अन्य सभी पत्थर टिके रहते हैं जिसमें पूरा भवन एक साथ जुड़ा रहता है। प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के पास मसीह के अधीन उच्च अधिकार के स्तर थे, जिन्हें उसके प्रतिनिधि कहा जाता था। बाकी सभी मसीही बिना किसी भेदभाव के उस संरचना में अलग-अलग पत्थर हैं।

अब इस भवन का लक्ष्य परमेश्वर का निवासस्थान बनना था ताकि परमेश्वर अपने लोगों में वास करे। इस्राएल राष्ट्र ने पुराने नियम में इस प्रकार की आशीष का अनुभव किया था, विशेषकर यरुशलेम में मंदिर के माध्यम से, जिसकी घोषणा सुलेमान ने 2इतिहास 6 में की थी। परन्तु पुराने नियम ने यह भी सिखाया था कि अंत में गैरयहूदी भी परमेश्वर की उपस्थिति में रहेंगे।

उदाहरण के तौर पर यशायाह 66:19-20 में परमेश्वर के वचनों को सुनें :

> वे जाति जाति में मेरी महिमा का वर्णन करेंगे... वे तुम्हारे सब भाइयों को... मेरे पवित्र पर्वत यरुशलेम पर यहोवा की भेंट के लिए ले आएंगे। **(यशायाह 66:19-20)**

इस अनुच्छेद में परमेश्वर ने सिखाया कि जब वह इस्राएल के राज्य की पुनरुथापना करेगा- जिसकी शुरुआत उसने नए नियम में मसीह के द्वारा की- तो इस्राएली परमेश्वर की आराधना करने के लिए यरुशलेम के मन्दिर में लौटेंगे। और हैरानी की बात यह है कि गैरयहूदी भी उनके साथ आएंगे, वास्तव में वे भिन्न राष्ट्रों से पवित्र भेंट के रूप में इस्राएलियों को परमेश्वर के पास लाएंगे।

अत: जब पौलुस ने सिखाया कि यहूदी और गैरयहूदी उसके मन्दिर के रूप में परमेश्वर की उपस्थिति में रहेंगे, तो उसका अर्थ था कि परमेश्वर का राज्य अपने परम लक्ष्य की ओर बढ़ रहा था। इसका अर्थ था कि परमेश्वर के राज्य की आशीषें अब सभी जातियों की ओर बढ़ रही थीं। परन्तु पौलुस ने इस विशिष्ट रूपक का प्रयोग क्यों किया? शायद उसने कलीसिया में यहूदियों और गैरयहूदियों के बीच जातिगत मेलमिलाप को बढ़ाने के लिए इसका प्रयोग किया।

पौलुस के दिनों में कुछ यहूदी मसीहियों ने इस विचार को फैलाया कि यहूदी गैरयहूदियों से श्रेष्ठ थे क्योंकि वे परमेश्वर के चुने हुए लोग थे। उन्होंने परमेश्वर से इतने समय से प्रमुखता को पाया था कि वे अब सोचने लगे थे कि वे इसके योग्य हैं।

परन्तु सत्य यह है कि यहूदी हों या गैरयहूदी सारी मनुष्यजाति मसीह के बिना खोई हुई है। हम में से कोई भी आशीष को पाने के बिल्कुल योग्य भी नहीं है; हम सब दोषी ठहराए जाने के योग्य हैं। केवल मसीह आशीष पाने के योग्य है। आभारपूर्वक, क्योंकि हम मसीह से जुड़े हुए हैं इसलिए परमेश्वर हमें भी आशीष के योग्य मानता है।

अत: आज जब हम परमेश्वर के राज्य का निर्माण करते हैं, तो हमें स्वयं पर केन्द्रित रहने की अपेक्षा परमेश्वर को सम्मान देने और उसकी उपस्थिति में रहने, एवं मसीह की महिमा को बढ़ाने का प्रयास करने के बड़े चित्र पर ध्यान देना आवश्यक है। और हमें इस बात को पहचानते हुए कि कोई विश्वासी किसी दूसरे से बढ़कर आशीषों को पाने के योग्य नहीं है, एक दूसरे के प्रति नम्र बनना आवश्यक है।

स्पष्टत:, इसका अर्थ है कि कलीसिया में आधुनिक जातिगत और वर्ग-संबंधी अवरोधों को तोड़ डालना चाहिए। परन्तु इसका अर्थ यह भी है कि हमें उन क्रियाओं से पश्चाताप करना चाहिए जिनके द्वारा हम एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं, या दूसरों को नुकसान पहुंचाकर स्वयं ऊपर चढ़ जाते हैं। शायद हमारी कलीसिया के अगुवे ही स्वयं को अन्य लोगों से महत्वपूर्ण समझते हैं, या शायद हम धनी मसीहियों से गरीब मसीहियों की अपेक्षा अधिक आदर से व्यवहार करते हैं। शायद हम हमारी स्थानीय कलीसिया या हमारे संप्रदाय को इतना ऊंचा समझते हैं कि हम दूसरी कलीसिया वालों को तुच्छ जानते हैं और परमेश्वर के राज्य के निर्माण में उनसे अलग होकर कार्य करते हैं। इन सभी विषयों में, पौलुस की शिक्षा है कि हमें हमारे घमंड और जिद्दीपन को दूर करना और परमेश्वर के राज्य में सभी विश्वासियों को हमारे समान रूप में स्वीकार करना आवश्यक है।

अब, जब मन्दिर का रूपक काफी उपयोगी था, परन्तु जो रूपक पौलुस ने इफिसियों की पत्री में राज्य के निर्माण को स्पष्ट करने के लिए सबसे अधिक इस्तेमाल किया, वह था देह का, विशेष रूप में मसीह की देह का, जिसका सिर मसीह है और शेष सभी विश्वासी एकसाथ मिलकर मसीह की देह का निर्माण करते है। पौलुस ने प्रयोग के अनेक अलग-अलग बिंदुओं को दर्शाने के लिए इस रूपक का प्रयोग अध्याय 1, 3, 4, और 5 में किया था।

उसने इस रूपक का परिचय इफिसियों 1:20-23 में इन शब्दों के साथ दिया था :

> (परमेश्वर ने मसीह को) मुर्दों में से जीवित करके और स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर बैठाकर सब प्रधानता और अधिकार... से ऊपर किया; और सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया और उसे सब वस्तुओं पर प्रधान नियुक्त करके कलीसिया को दे दिया, जो उसकी देह... है। **(इफिसियों 1:20-23)**

मन्दिर के रूपक के समान इसने भी परमेश्वर के राज्य का वर्णन किया- मसीह स्वर्ग में राजा के समान बैठा है और अपने लोगों, अर्थात कलीसिया के लाभ के लिए शासन कर रहा है।

पौलुस इफिसियों 3:6 में इसी प्रकार के रूपक के साथ यह कहते हुए आगे बढ़ता है :

> मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजाति के लोग भी सह-उत्तराधिकारी, एक ही देह के और वाचा की प्रतिज्ञा में सहभागी हैं। (इफिसियों 3:6)

इस अनुच्छेद में जातिगत मेलमिलाप पर पौलुस का बल देना स्पष्ट है। उसने तर्क दिया कि सभी यहूदी और गैरयहूदी मसीही मसीह में जुड़े हुए हैं, और मसीह में एकदूसरे से भी जुड़े हुए हैं, और कि वे दोनों केवल इसीलिए आशीष प्राप्त करते हैं क्योंकि वे मसीह की प्रतिज्ञाओं में सहभागी होते हैं।

मसीह की देह रूपक का पौलुस द्वारा संपूर्ण इस्तेमाल 4:1-16 में ही प्रकट होता है जहां उसने राज्य में कलीसियाई संगठन का तर्क दिया है। जहां उसने मुख्यत: कलीसिया में अगुवाई, प्रभाव और अधिकार को उन माध्यमों के रूप में दर्शाया जिनके द्वारा शेष कलीसिया को सेवकाई के लिए सामर्थ मिलती है। उसने बल दिया कि जो भले कार्य परमेश्वर ने हमारे लिए तैयार किए हैं वे मुख्यत: एकदूसरे की सेवा करने के कार्य हैं, और उनका उद्देश्य है कलीसिया का निर्माण ताकि यह ब्राह्मांड के प्रभु के लिए शासन करने का एक उपयुक्त राज्य बन जाए। इफिसियों 4:11-13 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

> परमेश्वर ने कुछ को प्रेरित, और कुछ को भविष्यद्वक्ता, और कुछ को सुसमाचारक और कुछ को रखवाले और शिक्षकों के रूप में नियुक्त किया, कि मसीह की देह को मजबूत करने के लिए पवित्र लोग सेवा के कार्य के योग्य हो जाएं, जब तक कि हम सब परमेश्वर के पुत्र के विश्वास और ज्ञान की एकता को प्राप्त न कर लें और एक परिपक्व मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूर्ण स्तर तक न पहुँच जाएं। (इफिसियों 4:11-13)

परमेश्वर ने कलीसिया में अगुवों को स्थापित किया है जिनका कार्य है कि वे हमें एकदूसरे के प्रति सेवा करने के लिए तैयार करें।

और इन अगुवों को दो लक्ष्यों की ओर कलीसिया की अगुवाई करनी है। इनमें से पहला है "विश्वास में एकता" तक पहुंचना। यहां पौलुस के मन में था कि कलीसिया परिपक्व और सही समझ को प्राप्त करके और सुसमाचार की आरंभिक समझ से ही संतुष्ट न होके, धर्मशिक्षा के आधार पर एक हो जाए। यह पौलुस की पूर्व की प्रार्थनाओं के अनुसार है कि परमेश्वर पौलुस के पाठकों को मसीह में परमेश्वर के राज्य की आशीषों को समझने के योग्य बनाए।

दूसरा लक्ष्य "मसीह की पूर्णता के संपूर्ण भाग को प्राप्त" करना है। यह लक्ष्य सार्वभौमिक है; यह सारी सृष्टि को मसीह के शासन में लेकर आना है, जिस प्रकार पौलुस ने इफिसियों 1:10 में सिखाया था। चाहे चकित कर देने वाला यह प्रतीत हो, मसीहियों के बीच उचित कलीसियाई अगुवाई और समर्पित सेवकाई के द्वारा पूरे ब्राह्मांड को मसीह के प्रभुत्व में लाया जा सकता है।

पौलुस ने इफिसियों 4:15 और 16 में इस रूपक को जारी रखा जहां उसने उन कुछ विशेष बातों को समझाया जो कलीसियाई अगुवों को लोगों को सिखाना चाहिए कि वे करें :

> प्रेम में सत्य को पकड़े हुए सब बातों में मसीह में बढ़ते जाएं जो हमारा प्रधान है, जिसमें सारी देह प्रत्येक भाग के उचित रूप से कार्य करने के द्वारा हर जोड़ में एक साथ जुड़कर और गठकर बढ़ती जाती है, और प्रेम में विकसित होती है, जब उसके सभी भाग अपना कार्य उचित रूप से करते हैं। (इफिसियों 4:15-16)

जब कलीसियाई अगुवा कलीसिया के समक्ष प्रेम में सत्य को बोलता है; तो कलीसिया सत्य को सीखती है। फलस्वरूप, प्रत्येक मसीही दूसरों के प्रति सेवा और उत्साह के कार्य करने के द्वारा अर्थपूर्ण रूप से सेवा कर पाता है। परन्तु इस बात पर भी ध्यान दीजिए- अगुवे की शिक्षाओं और कलीसिया के सेवा के कार्य दोनों के चरित्र में प्रेम का होना अनिवार्य है।

अब जिस प्रकार हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम और परमेश्वर के लिए हमारा प्रेम राज्य के भीतर वफादारी और समर्पण के रूप में मुख्यत: परिभाषित किया जाता है, अन्य मसीहियों के प्रति हमारा प्रेम इस प्रकार से परिभाषित किया जाता है- हमारे पड़ोसियों के प्रति हमारा प्रेम व्यक्तिगत संबंध की भावना ही नहीं है, बल्कि वफादारीपूर्ण समर्पण है जो उनकी भलाई चाहता है, चाहे हम उन्हें व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते तो भी।

परन्तु ये प्रेम केवल सहयोग या साथ मिलकर कार्य करना ही नहीं है। बल्कि मसीही प्रेम समझता है कि हमारे सहविश्वासी मसीह के उत्तराधिकार के भाग हैं। मसीह उनको अपना बनाने के लिए मरने हेतु भी तैयार था, और वह महिमा और सम्मान को प्राप्त करता है क्योंकि वे उसके हैं। यह हमें प्रेरित करना चाहिए कि उन्हें और अधिक महत्व दें और उनके प्रति सेवकाई करने का हर संभव प्रयास करें।

अब जब हमने राजा को सम्मान देने और राज्य का निर्माण करने के विषयों की जांच कर ली है, तो हमें हमारे अंतिम बिंदू की ओर मुड़ना चाहिए- ब्राह्मांड पर विजय पाना। यीशु अभी कलीसिया पर राजा है, परन्तु एक दिन आ रहा है जब वह अपने सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा और सारे ब्राह्मांड पर शासन करेगा।

ब्राह्मांड पर विजय पाना

जैसा कि हम देख चुके हैं, परमेश्वर का राज्य इस समय पाप और मृत्यु के वर्तमान युग के साथ-साथ पाया जाता है। इस समय के दौरान, परमेश्वर की शक्तियां- जिसमें कलीसिया भी शामिल है- दुष्टात्माओं और पाप में गिरी मानवजाति के राज्य के विरुद्ध युद्ध करती हैं। परन्तु अंत में यीशु पुन: लौटेगा। और जब वह लौटता है तो वह अपने शत्रुओं के विरुद्ध अपना अंतिम निर्णय देगा, जिसके द्वारा वह उसका विरोध करने की उनकी योग्यता को सदा के लिए कुचल देगा। अंधकार की शक्तियों पर अंत में विजय प्राप्त करना निश्चित है। परन्तु उस दिन तक उनके विरुद्ध खड़े होकर उनसे लड़ना हमारा उत्तरदायित्व है।

परन्तु पाप और मृत्यु के वर्तमान युग में भी, दुष्टात्माओं की शक्तियों के विरुद्ध लड़ाई में हमारा पलड़ा भारी है। जैसा हम देख चुके हैं, हमारा राजा उनसे ऊपर सामर्थ और अधिकार में विराजमान है, और हम उसके साथ विराजमान हैं। परमेश्वर ने हमें पहले से ही उनके दुष्ट आधिपत्य से छुड़ा दिया है और अपने राज्य में आशीष की अवस्था में पुनरुस्थापित कर दिया है। और उसने हमें हमारे शत्रुओं के सबसे तेज प्रहारों के विरुद्ध खड़े रहने के लिए अपने पवित्र आत्मा से सामर्थ प्रदान की है। इफिसियों 6:13 और 16 में पौलुस के शब्दों पर ध्यान दीजिए :

> परमेश्वर के सारे हथियार उठा लो ताकि तुम बुरे दिन का सामना कर सको, और सब कुछ पूर्ण करके स्थिर खड़े रह सको... और इनके साथ विश्वास की ढ़ाल लेकर स्थिर खड़े रहो, जिससे तुम दुष्ट के समस्त अग्निमय बाणों को बुझा सको। **(इफिसियों 6:13, 16)**

अपने अनुग्रह और आत्मा के द्वारा परमेश्वर दुष्टात्माओं के समूह का सामना करने के लिए हमें सामर्थ प्रदान करता है।

और इतना ही नहीं, परन्तु जितनी भी आशीषे कलीसिया स्वीकार करती है वह दुष्टात्माओं के समक्ष यह प्रमाण है कि उनकी हार निश्चित है। वास्तव में, पौलुस ने यहां तक कहा कि कलीसिया का

अस्तित्व ही परमेश्वर के सभी शत्रुओं के नाश की साक्षी देता है। इफिसियों 3:8-11 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

> मुझको यह अनुग्रह प्रदान किया गया कि मैं गैरयहूदियों को मसीह के अथाह धन का सुसमाचार सुनाऊँ, और सब पर यह प्रकट करूँ कि सब वस्तुओं के सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर में युगों से छिपे रहस्य की योजना क्या है। ताकि अब कलीसिया के द्वारा आकाश के शासकों और अधिकारियों पर परमेश्वर की विभिन्न प्रकार की बुद्धि को प्रकट किया जाए। उस अनन्त उद्देश्य के अनुसार जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में रखा था। (इफिसियों 3:8-11)

मनुष्यजाति की सृष्टि से पहले ही परमेश्वर ने दुष्ट शत्रुओं के समक्ष अपनी महिमा को प्रकट करने के लिए अपनी कलीसिया का इस्तेमाल करने की योजना बनाई थी। परन्तु उसने मसीह के समय तक इस बात को राज ही रखा। परन्तु अब जब मसीह आ चुका है, तो परमेश्वर अपने शत्रुओं के समक्ष अपनी बुद्धि और सामर्थ को दर्शाने के लिए कलीसिया का इस्तेमाल कर रहा है। वह शैतान की सबसे बड़ी योजनाओं को पराजित करने की उसकी योग्यता के उदाहरण के रूप में और सब वस्तुओं का अपने से मेलमिलाप करने की अपनी सामर्थ के प्रमाण के रूप में कलीसिया को दर्शाता है। आखिरकार, यदि वह मानवजाति को पाप के भ्रष्टाचार से मुक्त करवा सकता है, और यदि वह हमें एकदूसरे के साथ और स्वयं के साथ मेल करवा सकता है, तो ऐसा कुछ नहीं है जो वह नहीं कर सकता।

परन्तु हम केवल दिखावे के लिए नहीं हैं। कलीसिया परमेश्वर का पुरस्कार है। हम वह खजाना हैं जिसके लिए उसने युद्ध करके अपने शत्रुओं के राज्य से जीता था। हम वे लोग हैं जिनको उद्धार देने के लिए परमेश्वर इतिहास को नियंत्रित करता है, वह प्रिय दुल्हन हैं जिसको उद्धार देने और जिससे विवाह करने के लिए उसने अपनी जान दी। इफिसियों 5:23-27 में पौलुस द्वारा मसीह और कलीसिया के वर्णन को सुनें :

> क्योंकि पति पत्नी का सिर है जिस प्रकार मसीह कलीसिया का सिर है... मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया, और स्वयं को उसके लिए बलिदान कर दिया... कि वह अपने समक्ष एक महिमामय कलीसिया खड़ी करे, जिसमें न कोई कलंक, न कोई झुर्री और न कोई ऐसी बातें हों, अपितु पवित्र और निष्कलंक हो। (इफिसियों 5:23-27)

परमेश्वर हमसे प्रेम करता है और हमें महत्व देता है। और सब बातों का अपने से मेल करवाने, और ब्राह्मांड को नया बनाने और उसे शुद्ध करने की क्रिया में, वह हमसे आरंभ कर रहा है। और इसलिए, कलीसिया का अस्तित्व और कलीसिया की क्षमा और कलीसिया का शुद्धिकरण प्रमाणित करते हैं कि परमेश्वर का राज्य आरंभ हो चुका है। और यदि यह आरंभ हो चुका है, तो यह निश्चित रूप से पूर्ण भी होगा। और जब ऐसा होगा, तो दुष्टात्माएं पूरी तरह से नष्ट हो जाएंगी और मसीह का शासन पूर्ण रूप से आ जाएगा। जैसा पौलुस ने इफिसियों 1:22-23 में लिखा :

> और (परमेश्वर ने) सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया और उसे सब वस्तुओं पर प्रधान नियुक्त करके कलीसिया को दे दिया, जो उसकी देह, अर्थात् उसकी संपूर्णता है जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है। (इफिसियों 1:22-23)

यहां पौलुस के शब्द चकित कर देने वाले हैं- मसीह को ब्राह्मांड के राजा के रूप में उठाया गया है ताकि कलीसिया आशीषित हो सके। हम उसकी पूर्णता, उसकी देह हैं।

अपने पद और योग्यता के कारण मसीह शासन करने के योग्य है, और उसके शासन करने का कारण है कि वह हमें आशीष देता है। और इसलिए, यह बात कि कलीसिया आशीष पाती है, यह कि यहूदी और गैरयहूदी, पत्नियां और पति, अभिभावक और संतान, स्वामी और दास आपस में और परमेश्वर के साथ मेलमिलाप करते हैं, सकारात्मक प्रमाण है कि परमेश्वर सामर्थी, और भला और बुद्धिमान है, कि उसने ब्राह्मांड को नया करना आरंभ कर दिया है।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने इफिसियों को लिखी पौलुस की पत्री का अध्ययन किया है। हमने उसकी पृष्ठभूमि को देखा है जो पत्री के संदर्भ को दर्शाती है, और हमनें पत्री की संरचना और विषयवस्तु का आकलन भी किया है। अंत में, हमने इस पत्री में पौलुस की शिक्षाओं के आधुनिक प्रयोग पर भी ध्यान दिया है।

इफिसियों को लिखी पौलुस की पत्री में आज के संदर्भ में हमें सिखाने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण शिक्षा है। यह हमें सिखाती है कि उद्धार केवल लोगों का पाप से छुटकारा पाना ही नहीं है। बल्कि यह परमेश्वर के राज्य का निर्माण करना, उसे बनाए रखना और उसकी उन्नति करना भी है। जैसे हम परमेश्वर के राज्य की समझ में बढ़ते हैं, तो हम इसके शत्रुओं का सामना करने, परमेश्वर को भावने वाले मार्गों के अनुसार जीने, और हमारे एवं हमारे सहविश्वासियों के लिए उसकी आशीषों को पाने हेतु बेहतर रूप से तैयार हो जाएंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।